ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
पुस्तकालय
क91/254

॥ श्री गणेशायनमः ॥

कान्य कुब्ज

बंशावली

जिसमें

कान्य कुब्ज ब्राम्हणों उत्पत्ति धर्म—कर्म कुलीनता श्रेष्ठता तथा षोडश गोत्रों के आसानी स्थान विश्वा शिखा सूत्रप्रवर वेदपाद देवता आदि अत्युत्तमता पूर्वक वर्णन किये गये हैं ।

लेखक व संग्रहकर्ता वर्ण व्यवस्थापक :-

श्री पण्डित लालमणि धर्म शास्त्री जी

ने

अनेक प्राचीन नवीन बंशावलियों का सारांश लेकर निर्मित किया है ।

- प्रकाशक -

श्री जनता बुक स्टाल

मूलगंज, कानपुर । मूल्य २५) रुपये

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुस्तकालय
हरिद्वार
क9/3462

।। श्री गणेशाय नमः ।।

।। कान्यकुब्ज बंशावली ।।

।। मंगलाचरण ।।

शुण्ड़ामण्डल सम्प्रसारकलनैमौलिस्थलांदोलनै-
नेत्रोन्मीलन मीलनैरविरल श्रीकर्णतालक्रमैः ।
दानाऽलिध्वनितैर्विलासचरितै रूध्वाननोद्गर्जितै-
र्जातानदभरःकरीद्रबदनो नः श्रेयसेकल्पताम् । १

। अथ ब्राम्हणोत्पत्ति निर्णयम् ।

ब्राम्हणोऽस्यमुखमासो द्वाहूराजन्यः कृतः ।
उरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ यांशूद्रोऽजायत् ।।

यह वेद का प्रमाण है कि सृष्टिकर्त्ता विराट पुरुष के मुख से ब्राम्हण बाहू से क्षत्री व उरू अर्थात जंघा से वैश्य और पाद अर्थात चरणों से शूद्र भए। इस प्रकार चार वर्ण भये।

उत्तमांगोद्भवाज्ज्येष्ठयाद्ब्राम्हण्यस्यचधारणात् ।
सर्वस्यैवास्य सर्गास्य धर्मतो ब्राम्हणः प्रभूः ।।२।

धर्म शास्त्रज्ञ वेद को धारण करने वाला सबसे श्रेष्ठ ब्राम्हणसे उत्तमांग (मुख) से उत्पन्न ऐसे जो आचरण हैं तो बहुधा प्राचीन काल से

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त ब्राम्हणों ही में (धर्माधर्म विचारादि गुण कर्ण श्रवण व दृष्टिगोचर होते हैं इसलिए ब्राम्हण सब वर्णों से श्रेष्ठ यानी बड़ा है।

ब्राम्हणो जायमानोहि पृथिव्यां मधिजायते ।
ईश्वरः सर्वभूतानां धर्मकोष्स्य गुप्तये ।३।

इस संसार के मध्य ईश्वर का कोष (खजाना) ही धर्म हैं सो यह मनु महाराजके मुखसे सुनने से ज्ञात हुआ कि ये गुप्त धर्म को ब्राम्हण ही को सुविचारवान समझ सौंपा गया अन्य को नही और इसी धर्म रक्षा के निमित्त उत्तम अंग से ब्राम्हण ही उत्पन्न किया गया।

।। ब्राम्हणानां धर्मकर्मादि वर्णनम् ।।

विप्रोवृक्षस्तस्य मूलंचसंध्यावेदाःशाखाधर्मकर्मादिपत्राम्
तस्यान्मूभयत्नतो रक्षणीय छिन्नेमूले नैवशाखानपत्राम्

ब्राम्हण वृक्ष है उसकी जड़ संध्या हैं, वेद शाखा है और धर्म कर्म आदि पत्ते हैं इस कारण प्रयत्न करके मूल अर्थात् जड़ की रक्षा करनी चाहिए जड़ कट जाने पर न शाखा रहेगी न पत्ते। भावार्थ यह है कि संध्या बन्दनादि ब्राम्हणों को अवश्य करना चाहिए। कदापि छोड़ना नहीं योग्य है।

उत्तमानुत्तमान्गच्छन् हीरान्हीनाश्चवर्जयन् ।
ब्राम्हणःश्रेष्ठतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम् ।५।

अर्थात ब्राम्हण उत्तम धर्म कर्मादि ग्रहण और हीन २ त्याग करे तो यही ब्राम्हण कहादेगा तहीं तो इसके विरुद्ध चलने वाला शूद्र कहलाता है ग्रन्थ वृद्धि के भय से संक्षेप में कहा है इसी से आप बहुत समझ सकते हैं।

पुनः ब्राम्हण को नित्य प्रति पन्च महायज्ञ करना चाहिए सो है विप्रो ! धर्म की प्रथम श्रेणी यही जान नित्य प्रति संध्या बन्दना पंच महायज्ञ अवश्य धारण कीजिए ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुस्तकालय
शान्ति कुंज, हरिद्वार

ना पुत्राहि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः ।
न पुत्र दारा न जाति धर्मस्तिष्ठति केवलः ।

अर्थात मनुष्य के प्राण न्तर धर्म के अतिरिक्त कोई दूसरा प्यारा बन्धु साथ नही जाता । न स्त्री न पुत्र न जाति इत्यादि ।

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ ।
बिमुखावान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ।।

अन्तकाल समय यह शरीर जिसे आप लोग कहते हैं कि हमी यह है उसे छोड़ जाना होता हैं फिर वही हम जो यहां ही रह गए भाई बन्धु ने उसी क्षण फूंक फांक फेंक दिया । परन्तु दे दो शत्रु मित्र अधर्म [सत्यानाशी] धर्म [सुधारने वाला परमत्रि] ही साथ देते हैं ।

तस्माद्धर्म सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छनै ।
धर्मेणहि सहायेन तमस्तरति दुस्तरम् ।।१।

तिसमे हे भाइयो ! जो परमेश्वर ने नर शरीर तिसमें ब्राहण बना दिया किसी तरह उस परमात्मा की ओर देख कर स्वधर्म रक्षा कर इस ब्रम्ह वीर्य को निबाहो क्यों कि 'धर्मेणहि सहायेन तमस्तरति दुस्तरम् अर्थात धर्म की सहायता से महान्धकार से भी पार हो जाने की आशा है ।

।। अथ ब्राम्हण भेद वर्णनम् ।।

सर्वे द्विजाः कान्यकुब्जाः मागधं माथुरं बिना ।

सर्वप्रिय कान्यकुब्ज है मागध और माथुर को छोड़कर ।

कान्यकुब्जस्य द्वौ भेदौ ततौ जातौ परस्परौ ।
गौड़ द्राविड़ भेदस्यां बिन्ध्यस्योत्तर याम्यतः ।।

फिर कान्यकुब्ज ब्राम्हणों के दो भेद गौड़ और द्राविड़ विन्ध्याचल के उत्तर दक्षिण दो स्थानों के रहने से हुए ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गौड़ाश्चपंचधाख्यातः द्राविड़ाः चपधातथा ।
देशभागविभेदेन दशधा ब्राम्हणा स्मृतः ।।

फिर पांच प्रकार के गौड़ और पांच प्रकार के द्रविण ये दस भेद अनेक देशों में बसने से हुए ।

।। दशविधि ब्राम्हणानांवर्णनम् ।।

कर्णटकाश्चतैलंगा महाराष्ट्रश्चद्राविणाः ।
गुर्जराश्चेतिपचैते द्राविड़ा विन्ध्यदक्षिणे ।।

कर्नाटक १ तैलंग २ महाराष्ट्र ३ द्राविड़ ४ गुर्जर ५ ये पन्च-द्राविड़ कहाते हैं और बिंध्याचल के दक्षिण देशों में निवास करते हैं ।

सारस्वताः कान्यकुब्जा गौड़उत्कलमैथिलाः ।
पंचगौड़ईइतिख्याताविन्ध्यस्योत्त रवासिनः ।

सारस्वत १ कान्यकुब्ज २ गौड़ ३ उत्कल ४ मैथिल ५ ये पन्च गौड़ कहाते हैं और बिंध्याचल के उत्तर देशों में निवास करते हैं ।

इस प्रकार ये दस भेद ब्राम्हणों के भये इन्हीं से चौरासी भेद भये सो चौरासी भेद विस्तार भय से यहां न लिख कर बंशावली में कान्य-कुब्ज ब्राम्हणों का विस्तार लिखा जाता है ।

। कान्यकुब्ज ब्राम्हणोत्पत्ति वर्णनम् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि कान्यकुब्जविनिर्णयम् ।
श्रुत्वाद्विजमुखादेतद् वृत्तांतपूर्वंकालिकम् ।१।

अब कान्यकुब्ज ब्राम्हणों की उत्पत्ति का निर्णय जैसा ब्रद्ध जनों के मुख से सुना है वैसा पूर्व काल का वृत्तान्त लिखते हैं यह समस्त ब्रतांत तथा सब गोत्रों का विस्तार सर्व साधारण को सुगमता से समझने के लिए भाषा में लिखा जायेगा ।

जिन कान्यकुब्जों में जो सरयूपार बसे वे सरवरिया कहाये उनका वृत्तांत इसमें विस्तार मय से नहीं मिल सके । अब कान्यकुब्जों का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुस्तकालय
विभाग
शान्ति कुंज, हरिद्वार

वृत्तान्त लिखते हैं जिन कान्यकुब्जों के २ गोत्र हैं परन्तु षोडष-गोत्र विख्यात है सो कहता हूं ।

। षोड़शगोत्र वर्णनम् ।

अथ गोत्राणिवक्ष्यामि षोंडशैवद्विजन्मनाम् ।
कश्यपः काश्यचैव भरद्वाजो धनञ्जयः ।१।
कात्यायनोपमन्यू च साँकृतः कौशिकस्तथा ।
शांडिल्योथवशिष्ठश्च भरद्वाजस्तथैव च ।२।
गौतमो गर्गः काविस्तः वत्सः पाराशरस्तथा ।
इत्येतैकान्यकुब्जानां गोत्राण्याहुश्चषोड़श ।।
एषांमध्येतुषड्गोत्पन्नाः विप्राः सदोत्तमाः ।३

अब जो कान्यकुब्ज ब्राम्हणों के गोत्र हैं सों कहता हूं । कश्यप १ काश्यप २ भरद्वाज ३ धनन्जय ४ कात्यायन ५ उपमन्यु ६ साँकृत ७ कौशिक ८ शांडिल्य ९ वशिष्ठ १० भारद्वाज ११ गौतम १२ गर्ग १३ काविस्त १४ बस्स १५ पाराशर १६ ये कान्यकुब्जों के सोलह गोत्र है इनमें ६ गोत्र के ब्राम्हण उत्तम जाने । १ । २ । ३ ।

।। अथ षट्कुलानि ।।

कात्यायनोपमन्यू च भरद्वाजो चकश्यपः ।
शांडिल्यस्साँकृतश्चैव षड़तेगोत्राजोत्तमाः ।१।

कात्यायन १ उपमन्यू २ भरद्वाज ३ कश्यप ४ शांडिल्य ५ सांकृत ६ ये ६ गोत्र के कान्यकुब्ज कुलीन कहाते हैं ।

एतेषड्गोत्रनाविप्राः षड्गोत्रोएवकेवलम् ।
कुर्वन्तिकान्यदानवै नान्येषुदिग्भवषु च ।।२।

ये ६ गोत्र वाले अपने ६ गोत्र के मध्य कन्या सम्बन्ध करते अन्य स गोत्र में नहीं करते ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रथम यह बात भी अवश्य लिखने योग्य है कि प्रत्येक गोत्र में पुरुषों के नाम से अथवा पुरुष ने जिस ग्राम में निवास किया उस ग्राम के नाम से आस्पद अर्थात तिवारी, दीक्षित, शुक्ल, अवस्थी, भट्टाचार्य, बाजपेई, पाठक, दुबे, त्रिवेदी, चौबे, उपाध्याय, अग्निहोत्री कहाये गए, और यह आस्पद की पदवी गुण और कर्म से प्राप्त भई । जैसे वेदाध्ययन करने से अर्थात, वेद के करने से त्रिपाठी, त्रिवेदी, चतर्वेदी कहाये । और अध्यापक होने से पाठक, पाण्डे, बाजपेई, दीक्षित, तथा अवस्थी कहाये और गुण कर्मों में निर्मलता के कारण शुक्ल और सब गुण तथा कर्मों में निपुण तथा सबसे मिले रहने के कारण मिश्र कहाये यह भी जानना आवश्यक है कि पूर्व पुरुषों की सन्तान में से जिन पुत्रों ने पदवी प्राप्त की उनके नाम इस बशावली में लिखे गए और जो पुत्र अपने और अपने पिता के नाम से प्रसिद्ध है तहां पिता पुत्र दोनों के नाम लिखे गए इसी प्रकार क्रम पूर्वक समस्त बशावली में समझना । विशेष जानने वाला सर्वज्ञाता परमेश्वर है परन्तु हमने जहां तक देखा सुना सो लिख दिया ।

—: ।।०।। :—

कात्यायन गोत्रस्य व्याख्यानम्

श्रीमन्महर्षि कात्यायन जी के बंश में चतुर्भुज नाम द्विवेदी विख्यात भये सो टिकरिया में बस, ते टिकरिया के दुबे कहाए, तिन चतुर्भुज के बंश में सब डांका में मारे गए केवल एक पुत्रबधू गर्भिणी बची जिससे गार्गीदत्त नाम पुत्र अति प्रतापी भए । और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

टिकरिया के दुबे ते टिकरिया के मिश्र कहाए, पुनः गार्गीदत्त ने कजपुर के राजपुरोहित की कन्या से विवाह किया तहां ही निवास किया। (गार्गीदत्त की पहली स्त्री से पुत्र ४) खट्टे १ मीठे २ ऐंड़े ३ गैंड़े ४, खट्टे, मीठे कन्जपुर के मिश्र, ऐंड़े बदर्का के मिश्र गैंड़े सिकिड़ा क मिश्र, (गार्गीदत्त की दूसरी स्त्री से पुत्र २) देउता १ गोविंद २, ये दोनों कन्जपुर के मिश्र, (खट्टे के पुत्र ३) पवननाथ १ लोकनाथ २ विश्वनाथ ३, पवननाथ बैजेगांव के मिश्र, लोकनाथ पासीखेरे के मिश्र, विश्वनाथ गलाथे के मिश्र, पवननाथ के पुत्र ४, मुरलीधर१ मल्लिनाथ २ गोपीनाथ ३ मधुनाथ ४, ये चारों बैजेगांव के मिश्र, (मल्लिनाथ के पुत्र१) भावनाथ सो बद्दूसूसराय के मिश्र,(गोपीनाथ के पुत्र रामनाथ) पाली के मिश्र, (मधुनाथ के पुत्र नृसिंहनाथ) सो हड़हा के मिश्र, (लोकनाथ की पहली स्त्री से पुत्र १) मथुरानाथ सों पासीखेरे के मिश्र (दूसरी स्त्री से पुत्र ३). काशीनाथ १ रतिनाथ २ नीलकंठ ३, ये तीनों गलाथे के मिश्र, (विश्वनाथ के पुत्र १) शम्भूनाथ सो भी गलाथे के मिश्र (मीठे के पुत्र २) अनन्तराम १ चिन्तामणि-२, अनन्त राम ने राजारामपुर में निवास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किया तहां अग्निहोत्र यज्ञ किया तब से अग्निहोत्री का पद मिला सो अनन्तराम राजापुर के अग्निहोत्री कहाए (अनन्तराम की पहली स्त्रीसे पुत्र३) मथुरा१ अयोध्या २ प्रयाग ३, मथुरा बदर्का के अग्निहोत्री अयोध्या बिहंगाव के अग्निहोत्री, प्रयाग मोतीपुर के अग्निहोत्री (अनंतराम की दूसरी स्त्री से पुत्र २) मन्ना १ केशरी २, मन्ना चाँकापुर के अग्निहोत्री, केशरी रायपुर के मिश्र कहाए। मीठे के दूसरे पुत्र चिन्तामणि मिश्र गलाथे के, (चिंतामणि के पुत्र ३) केशी१ रामनाथ२ अनिरुद्ध३, केशी सोठियायेके मिश्र रामनाथ आंकिन के मिश्र, अनिरुद्ध कन्नौज ग्वाल-मैंदानके मिश्र (केशीके पुत्र२) हीरा.राम१ माधोराम २, ये दोनों सोठियाये के मिश्र, (हरीराम के पुत्र४) गनी १ गोवर्धन २ मारकण्डे ३ भवन ४, गनी भवन नौगाँव में बसे ते नौगांव के मिश्र, सोठियाये वाले गोवर्धन माकण्डे सोठियायें के मिश्र, (माधोराम की पहली स्त्री से पुत्र ३) इन्द्रमणि १ भावनाथ२ टीका राम३, ये तीनों सोठियायें के मिश्र, (दूसरी स्त्री से पुत्र२) राजाराम१ बीरभद्र२, ये भी दोनों सोठियाये के मिश्र (रामनाथ मिश्र के बंशमें दो तफरीकै भई आंकिन के मिश्र, मांझगांव के मिश्र, रामनाथ के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्र ४) मोहन १ कमल २ प्रजापति ३ कन्ते ४ मोहन, कमल ये दोनों बदर्का में रहे सो बदर्का के आंकिन वाले मिश्र, प्रजापति मांझगाँव में बसे ते मांझगांव के मिश्र, (मोहन के पुत्र ३) मूके १ प्रेम २ तजे ३, ये तीनों मुरादाबाद में बसे ते मुरादाबादी आंकिन के मिश्र, (कन्ते मिश्र के पुत्र ४) बिद्याधर१ रामदयाल२ घासीराम३ वीरेश्वर४ ये चारो निवादा वाले आंकिन के मिश्र, (प्रजापति मिश्र के पुत्र ६) हीरानन्द१ चतुर्भुज२ योगेश्वर ३ सिद्धी४ उर्बोधर५ बदले ६ (हीरानंद के पुत्र ६) चाचे १ देवमणि२ भोले ३ पलटे ४ कृपा ५ सतोषी६, ये सब मांझगांव के मिश्र कहाए, इनमें चाचे पलटे संतोषी ये तीनों माँझगाँव से काकोरी बसे ते काकोरी के मिश्र मझगैया कहाए, (चाचे के पुत्र २) पाराशर १ खेम२ ये दोनों काकोरी के माँझगैयामिश्र, (अनिरुद्ध की पहली स्त्री से पुत्र ४) लाले१ बाले२ हंसराम ३ शिरोमणि ४ (दूसरी स्त्री से पुत्र २, गंगाप्रसाद १ शंकर २ ये सब कन्नौज ग्वाल मैंदान के मिश्र अनिरुद्ध वाले कहाये, (शिरोमणि के पुत्र ३) दत्त१ दिवाकर२ हेम नाथ ३, ये तीनों कन्नौज ग्वालमैदान के मिश्र कहाए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[हेमनाथ के पुत्र ५] मूले१ धमने२ गंगाधर३ विश्व नाथ ४ रघुनाथ ५ ये भी पांचौ कन्नौज ग्वाल मैंदान के मिश्र कहाए [गंगाधर की पहली स्त्री से पुत्र ३] बन्दन १ गुलाल २ भगोले ३, ये तीनों कन्नौज ग्वाल मैंदान के मिश्र कहाए [दूसरी स्त्रीसे पुत्र ४] शम्भू१ वेदनाथ २ माधो ३ हरिनाथ ४, ये चारो दरौली में बसे, कन्नौज ग्वाल मैंदानके मिश्र कहाये [गंगाप्रसाद के पुत्र ४] घना १ बला २ सतीदास ३ श्रीहर्ष४ घना बला बोधीपुर के मिश्र, सतीदास कन्नौज के मिश्र, श्रीहर्ष गोपामऊ के मिश्र, [मूले के पुत्र ६] मोहन-लाल १ काशीनाथ २ जगन्नाथ ३ विश्वनाथ ४ पीथा ५ महाशर्म ६ इनमें से विश्वनाथ जगन्नाथ काशीनाथ पीथा ये बदर्का के मिश्र, मोहनलाल महाशर्म ये बदर्का बवनाटोला के मिश्र, [मोहनलाल के पुत्र ३] वेद-मूर्ति १ कमलनयन २ मान्धाता ३ ये भी बदरका के बवनटोला के मिश्र, [पोथा के पुत्र १] विज्ञानेश्वर सो बरुआ के मिश्र, [रिज्ञानेश्वर के पुत्र १] श्रीदत्त सो लावनी के मिश्र, [श्रीदत्त के पुत्र १] सूरेश्वर सो बांकीपुर के मिश्र [गैंडा के पुत्र ५] राधारमण१ सूर्य प्रसाद २ दयाराम ३ सेवाराम ४ गुलजारी ५ राधा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रमण जगदीशपुर के मिश्र, सूर्यप्रसाद सिरकिन्डा के मिश्र कहाये, दयाराम सरवर के तथा सेवाराम पत्यून्जा के मिश्र, गुलजारी नैथुवाके मिश्र[सेवाराम के पुत्र २] भगवनी १ भगवन्त २, भगवनी पत्यून्जा के दुबे, भगवन्त नलहापुर के मिश्र कहाए। इति।

। कात्यायन गोत्र मिश्रो का आसामी स्थान बिश्वा लिखते ।

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
गार्गीदत्त	कन्जपुर के	१०	केशरी	रामपुर के	५
खट्टे	,,	१०	चिन्तामणि	गलाथे के	१३
मीठे	,,	१०	केसी	सोठियाय के	२०
ऐंड़े	बदर्का के	१५			
गेंड़े	सिरकड़ा के	१०	अनिरुद्ध	कन्नौज गलालमैंदान	२०
देउता	कन्जपुर के	१०	हरीराम	सोठियाये के	१७
पवननाथ	बैंजेगांव के	१६	माधवराम	,,	१७
लोकनाथ	पासीखेरे के	१५	गनी	नोगायें 'सोठियायें	१७
विश्वनाथ	गलाथे के	१०	मवन	,,	१७
मुरलीधर	बैंजेगांव के	१६	गोबर्द्धन	,,	२०
मल्लिनाथ	,,	१६	मारकण्डे	,,	१८
गोपीनाथ	,,	१३	इन्द्रमणि	,,	१९
मभनाथ	,,	१६	मावनाथ	,,	१८
मावनाथ	बद्द सराय के	१६	टीक राम	,,	११
रामनाथ	पाली 'बैंजेगांव'	२०	रजाराम	,,	१८
नृसिंहनाथ	हड़हा 'बैंजेगांव'	१४	बीरमव	,,	१८
मथुरानाथ	पासीखेरे के	१५	मोहन	बदर्का आँकिन	२०
काशीनाथ	गलाथे के	१३	कमल	,,	२०
रतिनाथ	,,	१४	प्रजापति	मांझगाव के	२०
नीलकण्ठ	,,	१४	कन्ते	निवादा आँकिन	१८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
शम्भूनाथ	”	१३	मूले	मुरादाबाद (आंकिन)	२०
प्रेम	मुराबाबाद (आंकिन)	२०	शकर	कन्नौज (ग्वालमैंदान)	१७
तजे	”	२०	दत्त	”	१९
विद्याधर	निवादा ”	१७	दिवाकर	”	१९
रामदयाल	”	१६	हेमनाथ	”	१९
घासीराम	”	१६	मले	”	१९
वीरेश्वर	”	१८	घमने	”	१९
हीरानन्द	मांझगांव के	२०	गंगाधर	”	१९
चतुर्भुज	”	२०	विश्वनाथ	”	१९
योगेश्वर	”	२०	रघुनाथ	”	१९
ाद्धी	”	२०	बन्दन	”	१९
ीधर	”	२०	गुलाल	”	१९
ाबले	”	२०	मगोले	”	१९
चाचे	काकोरी ”	२०	शम्भू	दरौली ”	१९
पलटे	”	१९	बैदनाथ	”	१९
सन्तोषी	”	१९	माधो	”	१९
क्षेमणि	मांझगांव के	२०	हरिनाथ	”	१९
भोले	”	१८	घना	बीघीपुर (कन्नौज)	१०
कृपा	”	२०	बला	”	१०
पारासर	काकोरी	१८	सतीदास	कन्नौज	१५
लेम	”	१८	श्रीहर्ष	गोपामऊ कन्नौज	१०
लाले	कन्नौज-ग्वालमैंदान	२०	कमलमाल	पिहानी	१०
बाले	”	२०	विश्वनाथ	बदर्का के	१६
शिरोमणि	”	२०	जगन्नाथ	”	१६
गंगाप्रसाद	”	१८	काशीनाथ		१६
मोहन	बदर्का-बबनटोला	१४	पथा	”	१०
महाशर्म	”	१०	भगवन्त	नलहापुर के	१६

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
वेदमूर्ति	,,	१४	। कात्यायन गोत्र दुबे		
कमल नयन	,,	१३	। चतुर्भुज	टिकरिया के	५
मान्धाता	,,	१४	। भगनी	पत्योजा के	७
विज्ञानेश्वर	बरुआ के	१५	।		
श्रीदत्त	लवानी के	१२	। कात्यायनगोत्र अग्निहोत्री		
सुरेश्वर	बांकीपुर [लावनी	१२	। अनन्तराम	राजापुर के	१०
राधारमण	जगदीशपुर के	१२	। मथुरा	बदर्का के	५
सूर्यप्रसाद	सिरकिड़ा के	१०	। अयोध्या	बिहसांव के	१०
दयाराम	सरवर के	१०	। प्रयाग	मोतीपुर के	३
सेवाराम	प्रत्यन्जा के	७	मन्ना	चाँदपुर के	८

॥ इति कात्यायन गोत्र ॥

। कश्यप गोत्रस्य व्याख्यानम् ।

ब्रम्हाके पुत्र मारीचि, मारीचि के कश्यप, कश्यपके बंश में देवल उत्पन्न भए, देवल काशमीर में निवास करते थे सो वहाँ से भदावर ग्राम में आए । भदावर के राजा ने देवल का अतिसत्कार किया । देवल के पुत्र आशादत्त परम विद्वात भए, सो आशादत्त जो शिवराजपुर में आए तहां शिवराजपुर के राजा को को अपना पुरोहित किया और साढ़े दस ग्राम दिए तिन आशादत्त के पुत्र ११ भए, प्रथम पुत्र धनीराम सो मनोंह में बसे, द्वितीय काशीराम गरुआ में बस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तृतीय राजाराम सखरेज में बसे, चौथे बंशगोपाल गौरी में बसे पांचवे लोकनाथ शिवराजपुर में बसे छठे बन्दीराम शिवली में बसे, सातवें परमानन्द उमरी में बसे, आठवें सुखानन्द एचोरमें बसे, नवें हीराराम हरबशपुर में बसे, दशवें चन्दन गूदरपुरमें बसे, ग्यारवें नन्दराम चिंगसपुर में बसे, सो आधा स्थान है यह सब जहां बसे तहाँ के तिवारी कहाए, मनोह में धनो राम त्रिपाठी के पुत्र ४, हरी १ धन्नी२ लक्ष्मण३ खेचर ४, हरीके आशादत्ततिवारी खेउराके धन्नी के करिंग तेवारी, लक्ष्मण शिवराजपुरके तिवारी, खेचर के अवस्थी, औनहा ग्राम वाले हवीके पुत्र २, बद्री १ बोदल२ बद्री खूरा के आशादत्ती तिवारी कहाये बद्री के पुत्र हेमनाथ बदर्का के दीक्षित कहाए, बोदल तिवारी मनोह के बावनग्रन्थी कहाये धन्नी के पुत्र २ नन्दू १ बोधू २, नन्दू चिलौली के तिवारी, बोधु रतनपुर के तिवारी, लक्ष्मणके पुत्र२, कल्याण १ परमेश्वरी२ ये दोनों लक्ष्मणपुरके मिश्र कहाए, बोदल तिवारीके पुत्र२ केशवराम१ कृष्णदत्त२, केशवराम शिवली में बसे ते शिवलीके अवस्थी कृष्णदत्त तिवारी, मनोहके, कृष्णदत्त के पुत्र ४, ७रबी १ खेम २ प्रयाग३ गोपाल४ ये

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी मनोह के तिवारी कहाए, [उरबी के पुत्र ३] हेम नाथ१ अटेरि २ परमसुख ३, हेमनाथ मनोहके तिवारी अटेरि करिलुआ के अग्निहोत्री, मरमसुख लक्ष्मणपुर के मिश्र [अंटेरि के पुत्र ४] भीम १ भैरव२ बद्री ३ केदार ४, भीम करिलुआ के अग्निहोत्री, भैरव कोड़ा कठरुआ के अग्निहोत्री [केदार के पुत्र २] मन्ना १ मोती २, मन्ना सिरौंज के अग्निहोत्री, मोती जनसार पुर के अग्निहोत्री [परमसुखके पुत्र २] कमल१ देव सर २ कमल नगरा के मिश्र, देवशर विरामपुरकेमिश्र [खेम तिवारी के पुत्र४] गंगा १, पैकू २ कन्नू ३ जन्नू ४, गगा शाहाबादी मिश्र, पैकू औहाग के तिवारी, कन्नू बाँगरमऊ के दुबे, जन्नू नवाये के अवस्थी। गंगा के पुत्र गौतमाचार्य, सो रामपुरी गौतमाचार्य के मिश्र कहाए, [पैकूके पुत्र २] शिवदत्त१ भट्टदत्त२ दोनों ओहराके तिवारी [कन्नू के पुत्र २] दिबोल १ हरिहर २, दिबोल आटीके दुबे कहाए, हरिहरपुर बीठ-लपुर के दीक्षित दबोलके पुत्र३ शिवबोल१ भवदेव२ भवानी ३ शिबोल बांचरके दुबे भवदेव शिवराजपुर के दुबे भवानी गलाथे के दुबे हरिहर के पुत्र ३ श्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कादन १ भेदन २ बबुआ ३ श्रीकान्त ऊगू के दीक्षित भेदन नौगाए के दीक्षित, बबुआ बोठलपुर के दीक्षित (श्रीकाँत के पुत्र ४) नंदन १ मुकुन्द २ अनंतराम ३ हेमनाथ ४, नदन बिहार के दीक्षित, श्रीकान्त बाले मुकुन्द नौगायें के दीक्षित अनन्तराम ऊगू के दीक्षित हेमनाथ बदर्का के दीक्षित, ये सब श्रीकाँत के दीक्षित कहाए (मुकुन्द के पुत्र ३) कान्ह १ जय २ मुरारी ३ ये तीनों नौगायें के श्रीकान्त के दीक्षित कहाए। (जन्नू के पुत्र २) स्यूनी १ सीरू २, स्यूरी पिहानी के अवस्थी, सीरू नवायें के अवस्थी, (प्रयाग के पुत्र ३ आशाराम १ शिवदत्त २ भट्ट ३, आशाराम खेउरा के अवस्थी, शिवदत्त रतनपुर के तिवारी, भट्ट मनोह के तिवारी, (शिवदत्त के पुत्र १, बेनो सो रतन पुर के तिवारी कहाये। 'गोपाल तिवारी के पुत्र ३) मुद्री १ हसरोम २ भवानी ३, मुद्री सखरेज में बसे ते सखरेज के तिवारी, हसराम पडरी के तिवारी, भवानी सखरेज के तिवारी, [भवानी के पुत्र ३] धनई १ मनई २ सीतल ३, धनई चांदपुर के तिवारी मनई बकसर के तिवारी, सीतल मोरंगपुर के तिवारी इति मदोह। बरुआ में [काशीराम के पुत्र ६] सधारी १ बिहारी २ गिरधारी ३ अनतराम ४ मनीराम ५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुन्दन ६, सधारी सगुनापुरी दुबे, बिहारी नागापुरी दुबे, गिरधारी आटीपुर के दुबे, अनन्तराम बरुआ के तिवारी, मनीराम गोपालपुर के तिवारी, कुन्दन बांगरमऊ के तिवारी, इति बरुआ सखरेज में राजाराम के पुत्र ४, राधे १ जानकी २ चतुरी ३ कन्हई-४, राधे जानकी एकड़ला के तिवारी, चतुरी, कन्हई एड़हा के तिवारी, (राधे के पुत्र २) राय १ विभाकर २, रायके अवनिहार के तिवारी, विभाकर जुही के तिवारी, (चतुरी के पुत्र ३) चदन १ मतिराम २ सखाराम ३, चन्दन हड़हा के अग्निहोत्री, मतिराम सांपेपुर के तिवारी, सखाराम गेल्ल के ऊंचेपुर के तिवारी, (कन्हई के पुत्र २) यदुनाथ १ बदन २, यदुनाथ असनीके तिवारी, बन्दन अंचितपुर के तिवारी।

इति, सखरेज गौरी में (बंशगोपालके पुत्र १) बाबू सो गौरीक तिवारी, (बाबू के पुत्र ५) बेनी१ मनऊ२ सुन्दर ३ साहब ४ हिमचल ५, ये पांचौ पवभैया तिवारी कहाए, बेनी रतनपुरके तिवारी, मनऊ श्यामलपुर के तिवारी, सुन्दर बिद्धनपुरके तिवारी, साहेब हिमंचल विहारपुरके तिवारी, (सुन्दर के पुत्र२) खेम१ जिज्ञासु २, मिघौली के अवस्थी, जिज्ञासु खिर्मीपुरके अवस्थी, इति गौरी शिवली में (बन्दीराम के पुत्र १) लोक-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाथ सो शिवली के तिवारी, (लोकनाथ के पुत्र ३) रमते१ श्यामल२ रंजन ३, रमते फकहापुर के तिवारी श्यामल दलीपपुर के तिवारो, रंजन ककरदही के तिवारी,(रमतेके पुत्र ४) गौरी१ गैली२ अगद३ मगद ४, गौरी पुरवाके तिवारी, गैली विहारपुरके तिवारी अंगद चचेड़ाके तिवारी, मंगद शाहाबाद के तिवारी, (रजन के पुत्र ३) भग्गी१ भोला२ दलपति३, भग्गी-बीरपुर के तिवारी, भोला बिहारपुर के तिवारी, दल पति गूदरपुरके तिवारी, (श्यामल के पुत्र २) कशू १ बंशू २, कंशू नौबस्ता के तिवारी, बंशू बरुआरी के तिवारी, (कंशू के पुत्र२) कश्यप१ दिलीप २, कश्यप विदारीके तिवारी, दिलीप दयालपुर के तिवारी इति शिवली उमरी में परमानन्द तिवारी की पहली स्त्री से पुत्र१, बचनू सो छमरीके तिवारी (बचनूके पुत्र२) नयनी१ माखन २, नयनी कुम्हरायेके तिवारी माखन महीलीके तिवारी (माखन के पुत्र २) चण्ड१ मुण्ड२ चंड मगेराके तिवारी, मुण्ड शिवपुरके तिवारी, (परमानन्दकी दूसरी स्त्रीसे पुत्र४; हंसू१ जीवन२ देवी ३ शंकर४, हसू गुनरी के तिवारी, जीवन चिलौली के तिवारी, देवी बरगदपुर के बरगदहा तिवारी, शंकर धतूरा के तिवारी इति। उमरी पचोर में सुखानन्द

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के पुत्र बंशीधर सो दयालपुर के तिवारी, (बंशीधर-के पुत्र ३) गन्नी १ बोधू २ नन्दू ३, गन्नी श्रीपतिपुर के तिवारी, बोधू रतनपुर के तिवारी, नन्दू बिलौली के तिवारी, (नन्दू के पुत्र २) गंगू १ बोदल २, गंगू पचोर के तिवारी, बोदल बिरामपुर के तिवारी इति पचोर। शिवराजपुर में (लोकनाथ के पुत्र ४, कंस१ चूक २ आनन्दबन ३ गगबार ४, कस नौबस्ता के तिवारी, चूक पचभइया के तिवारी, आनन्दबन बहर मपुर के तिवारी, गगवार शिवराजपुर के तिवारी कहाए इति। शिवराजपुर हरबंशपुर में हरीराम के पुत्र १ गडरू सो शिवराजपुर के तिवारी, (गड़रू के पुत्र ४) सुखी१ दुखी२ श्रीपति३ सतू४, सुखी बोधी पुरके तिवारी, दुखी गड़रीपुर के तिवारी सन्तू सप रीपुर के तिवारी, श्रीपति के पुत्र २ हरजू१ प्रभुजू २, ये दोनों घरबाईपुर के तिवारी कहाये इति हर-बशपुर गूदरपुर के तिवारी (हरिनाथ के पुत्र ६) राते१ पीते२ चन्दू ३ हर्ष ४ बछनू ५ माते ६, राते पीते गूदरपुर के तिवारी चन्दू हर्ष बछनू माते ये बरुआ के तिवारी कहाए (चन्दू के पुत्र २) कन्हरू १ भगवानदास २ ये भी दोनों बरुआ के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिवारी (कन्हरूके पुत्र८) रामनाथ१ जगन्नाथ२ धनजई३ किशोर ४ धनी ५ भूधर ६ जागन ७ पुरुषोत्तम ८, सो रामनाथ जगन्नाथ कठारे के तिवारी धनजई गूदरपुर के तिवारी और बाकी ५ अपने २ स्थानके नाम से, किशोर महंगपुर के एक धनी आनन्द के २ भूधर छिताबले के ३ जागन झगड़गामी के पुरुषोत्तम सिंहूड़ाके तिवारी कहाये (भावदास के पुत्र२) पहली स्त्री से रमई१ घाव२, रमई घाघ जहंगीराबादी तिवारी (घाघ के पुत्र४) नंदराम१ गजराम२ दीनानाथ ३ महाशर्म ४, ये चारो जहांगीराबाद घाघ के तिवारी कहाए [रमईके पुत्र५] दमा१ गोपाल२ गोवर्द्धन ३ चत्तू ४ आशाधर ५, दमा सपईवाले तिवारी गोपाल पड़रीवाले तिवारी, गोबर्द्धन कठेरुआ वाले तिवारी, चत्तू जहांगीराबादी तिवारी, आशाधर जो रमईके पुत्र दूसरी स्त्रीसे थे सो आशाधरने बीरबल के यहां बिवाह किया तब से बीरबल तिवारी कहाए जो जमुनापार हैं, [दमाके पुत्र३] श्रीधर १ लोकनाथ २ लक्ष्मण३, ये तीनों सपईके दमा के तिवारी [गोपालके पुत्र २] धरणीधर१ जगन्नाथ २, येदोनों पड़रीके गोपालके तिवारी [गोबर्द्धनके पुत्र७] चक्रपाणि१ कमलापति२ मोहन३ मुरलीधर४ उमादत्त५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मेश्वर ६ प्रद्युम्न ७, ये सातो कठेरुआके गोबर्द्धन के तिवारी (चत्तू के पुत्र ६) देउता १ लाला २ रूपा ३ मोहन ४ हीरानन्दन ५ गुलरिहा ६, ये छहो जहंगीरा बादी तिवारी चत्तू के कहाए (भावदास की दूसरी स्त्रीसे पुत्र ४) अचित १ गलहू २ गणपति ३ माधव ४ ये चारो बरुआ में बसे ते बरुआ के तिवारी कहाये, (माधव के पुत्र १) भभुआ सो गोपालपुर के तिवारी बिगसपुर में (नन्दराम के पुत्र १) सबिता सो चिंग-सपुर के तिवारी, नन्दराम के बंश में देउता और जसराम ये दोनों अपने २ नाम से अग्निहोत्री कहाये इसी गोत्र में भयपुरा के अग्निहोत्री भी हैं। इति।

। कश्यप गोत्र तिवारियों के असामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
आशादत्त	शिवराजपुर	५	। नन्दराम	चिंगसपुर आधा	१०
बनीराम	मनोह	१०	। हारा	ख्यूरा, आशादत्ती	२
कोशोराम	बरुआ	१०	। धन्नी	करिंग	७
राजाराम	सखरेज	१०	। लक्ष्मण	शिवराजपुर	५
बंशगोपाल	गौरी	१०	। बद्री	ख्यूरा आशादत्ती	३
लोकनाथ	शिवराजपुर	१०	। बोदल	मनोह (बावनग्रंथी)	६
बन्दीराम	शिवली	१५	। नन्दू	चिलौली	७
परमानन्द	उमरी	१०	। बीधू	रतनपुर	७
सुखानन्द	पवोर	१०	। कृष्णदत्त	मनोह बावनग्रन्थी	४
हीराराम	हरबंशपुर	१०	। उदवो		४
चन्दन	गूदरपुर	१०	। खेम		७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिवारी (कन्हरूके पुत्र८) रामनाथ१ जगन्नाथ२ धन-
जई३ किशोर ४ धनी ५ भूधर ६ जागन ७ पुरुषोत्तम
८, सो रामनाथ जगन्नाथ कठारे के तिवारी धनजई
गूदरपुर के तिवारी और बाकी ५ अपने २ स्थानके
नाम से, किशोर महंगपुर के एक धनी आनन्द के २
भूधर छितावले के ३ जागन झगड़गामी के पुरुषो-
त्तम सिंहूड़ाके तिवारी कहाये (भावदास के पुत्र२)
पहली स्त्री से रमई१ घाघ२, रमई घाघ जहंगीराबादी
तिवारी (घाघ के पुत्र४) नंदराम१ गजराम२ दीना
नाथ ३ महाशर्म ४, ये चारो जहांगीराबाद घाघ के
तिवारी कहाए [रमईके पुत्र५] दमा१ गोपाल२ गोव-
र्द्धन ३ चत्तू ४ आशाधर ५, दमा सपईवाले तिवारी
गोपाल पड़रीवाले तिवारी, गोबर्द्धन कठेरुआ वाले
तिवारी, चत्तू जहांगीराबादी तिवारी, आशाधर जो
रमईके पुत्र दूसरी स्त्रीसे थे सो आशाधरने बीरबल
के यहां बिवाह किया तब से बीरबल तिवारी कहाए
जो जमुनापार हैं, [दमाके पुत्र३] श्रीधर १ लोक-
नाथ २ लक्ष्मण३, ये तीनों सपईके दमा के तिवारी
[गोपालके पुत्र २] धरणीधर१ जगन्नाथ २, येदोनों
पड़रीके गोपालके तिवारी [गोबर्द्धनके पुत्र७] चक्र
पाणि१ कमलापति२ मोहन३ मुरलीधर४ उमादत्त५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मेश्वर६ प्रद्युम्न ७, ये सातो कठेरुआके गोबर्द्धन के तिवारी (चत्तू के पुत्र ६) देउता १ लाला २ रूपा ३ मोहन ४ हीरानन्दन ५ गुलरिहा ६, ये छहो जहंगीरा बादी तिवारी चत्तू के कहाए (भावदास की दूसरी स्त्रीसे पुत्र ४) अचित१ गलहू २ गणपति ३ माधव४ ये चारो बरुआ में बसे ते बरुआ के तिवारी कहाये, (माधव के पुत्र१) भभुआ सो गोपालपुर के तिवारी विगसपुर में (नन्दराम के पुत्र १) सबिता सो चिंग-सपुर के तिवारी, नन्दराम के बंश में देउता और जसराम ये दोनों अपने २ नाम से अग्निहोत्री कहाये इसी गोत्र में भयपुरा के अग्निहोत्री भी हैं। इति।

। कश्यप गोत्र तिवारियों के असामी स्थान बिश्वा लिख्यते।

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
आशादत्त	शिवराजपुर	५	। नन्दराम	चिंगसपुर आधा	१०
बनीराम	मनोह	१०	। हारा	ख्यूरा, आशादत्ती	२
कोशोराम	बरुआ	१०	। धन्नी	करिंग	७
राजाराम	सखरेज	१०	। लक्ष्मण	शिवराजपुर	५
बंशगोपाल	गौरी	१०	। बद्री	ख्यूरा आशादत्ती	३
लोकनाथ	शिवराजपुर	१०	। बोदल	मनोह (बावनग्रंथी)	६
बन्दीराम	शिवलो	१५	। नन्दू	चिलौली	७
परमानन्द	उमरी	१०	। बीधू	रतनपुर	७
सुखानन्द	पवोर	१०	। कृष्णदत्त	मनोह बावनग्रन्थी	४
हीराराम	हरबंशपुर	१०	। उदवी		४
चन्दन	गूदरपुर	१०	। खेम		७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
प्रयाग	मनोह	४	बाब	गौरी	५
गोपाल	,	४	बेनी	रतनपुर 'पंचभैया'	५
हेमनाथ	,	८	मनऊ	श्यामलालपुर ,	६
पंकू	ओहाग	९	सुन्दर	बिद्धनपुर ,	६
शिवदत्त	,	९	साहेब	बिहारपुर ,	५
भट्टदत्त	,	९	हिमांचल	, ,	५
शिवदत्त	रतनपुर	४	लोकनाथ	शिवली	१०
बेनी	,	४	रमते	फकहापुर	९
भट्टू	मनौह	४	श्यामलाल	दलीपपुर	१०
शुद्धो	सखरेज	१२	रज्जन	ककरदही	११
हसराम	पड़री	११	गौरी	पुरवा	३
भवानी	सखरेज	११	गैलो	बिहारपर	५
नई	चांदपुर	८	अंगद	सचेड़ी	६
नई	बक्सर	१०	मगद	शाहाबान	३
शीतल	मौरंगपुर	६	भग्गी	बीरपुर	५
अनन्तराम	बरुआ	७	भोला	बिहारपुर	५
मनीराम	गोपालपुर	७	दलपति	गूदरपुर	९
कुन्दन	बांगरमऊ	७	कंश	नौबस्ता	७
राधे	एकड़ला	११	बंशू	बरुआरी	७
जानकी	,	११	कश्यप	बिवारी	५
चतुरी	हड़हा	१०	दिलीप	दयालपुर	६
कन्हई	,	१०	बचन्	उमरी	६
राय	अवनिहारपु	८	नयनी	कुम्हरांव	५
बिभाकर	जही	८	माखन	महोला	४
मतिराम	सांपेपुर	८	चण्ड	भंगेरा	१०
सखीराम	गेल्ल ऊंचेपुर	८	मुण्ड	शिवराजपुर	१०
यदुनाथ	असनी	८	हंमू	गुनरी	५
बन्दन	अचितपुर	८	जीवन	चिलौली	१०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
देबी	बर्गदपर[बर्गदहा]	६	शंकर	धतूरा	१०
बंशीधर	दयालपुर	१०	घाघ	,	१७
रमई	जघौराबाद	१०	नन्दराम	जंघौराबाद-घाघ	१७
गन्नी	श्रीपतिपुर	१०	गजराम	,	१७
बोध	रतनपुर	१०	दीनानाथ	,	१७
नन्दू	चिलौली	७	महाशर्म	,	१७
गंगू	पचोर	४	रामनाथ	कठारे	१८
बोदल	बिरामपुर	४	जगन्नाथ	,	१४
कंश	नौबस्ता	१२	धनजई	गूदरपुर	१२
चक	पंचभैया	१०	किशोर	महंगपर	१२
आनन्दबन	बरहमपुर	८	धनौ	आनन्द	१२
बगुवार	शिवराजपुर	९	भधर	छितावले	३
गंड़रू	,	१०	जागन	झगड़ागामी	२
सुखी	बोधीपुर	५	पुरुषोत्तम	शिहुड़ा	२
दुखी	गड़रीपुर	४	दमा	सपई	१९
श्रीपति	वाईपर घर	५	गोपाल	पड़री	१७
सन्तू	सपरी	५	गोवर्द्धन	कठेरुवा	१९
हरजू	घरवाइपुर	४	चत्तू	जघौराबाद	२०
प्रभजू	,,	४	आशाधर	यमुनापार बीरबली	५
हरिनाथ	गूदरपुर	१०	श्रीधर	पड़री[गोपाल]	१८
राते	,,	१०	लोकनाग	सपई [दमा]	१९
पीते	,,	१०	लक्षमण	,,	१८
चन्दू	बरुआ	१०	धरणीधर	पड़री[गोपाल]	१८
हर्षू	,,	१०	जगन्नाथ	,, ,,	१७
बछनू	,,	७	चक्रपाणि	कठेरुवा गोवर्द्धन	२०
माते	,,	१०	कमलापति	,,	२०
कन्हरू	,,	१०	मोहन	,,	१९
भगवानदास	,,	५	मुरलीधर	,,	१२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
उमादत्त	,	१८	गुलरिहा	जहगीराबाद चत्त्	१७
धर्मेश्वर	,	१८	अचित	बरुआ के	१०
प्रदुम्न	,	१८	गलहू	,	१०
देउता	जघीराबाद चत्त्	११	गणपति	,	१०
लालो	,	५०	माधव	,	१०
रूपा	,	२०	भंभुआ	गोपालपर, भभुवा	१३
मोहन	,	१८	सबिता	चिगसपुर	५
हीरानन्द	,	१७			

कश्यप गोत्र दीक्षित

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
हेमनाथ	बदरका	९	हेमनाथ	बदर्का, श्रीकांत	१९
हरिहर	बीठलपुर	१६	मैंदान	नौगायें	१४
श्रीकान्त	ऊगू	२०	बबुआ	बीठलपुर	१७
नन्दन बिहार,	श्रीकांत	१९	कान्ह	नौगायें	१८
मुकुन्द	नौगायें	२०	जय	,	१८
अनन्तराम	ऊगू	२२	मुरारी	,	१८

कश्यप गोत्र मिश्र

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
कल्याण	लक्ष्मण	४	कमल	नगरा	८
परमेश्वरी	,	५	देवसर	विरामपुर	४
परमसुख	,	५	गंगा	शाहोबाद	१२
			गौतमाचार्य	रामपुर	८

कश्यप गोत्र अवस्थी

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
खेचर	औनहां	१०	स्यूनी	पिहानी	५
जन्नू	नवायें	८	आशाराम	खेउरा	२
केशवराम	शिवली	५	खेम	मिधौली	२
सीरू	नवाये	८ सं	विजाशू	खिरमीपुर	२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कश्यप गोत्र दुबे

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
कन्नू	बांगरमऊ	७	भयानी	गलाये	५
दिबोल	आटी	४	सवारी	सगुनापारी	५
शिबोल	बांचर	४	बिहारी	नागापुरी	५
भवदेव	शिवराजपुर	४	गिरवारी	आंटीपुर	५

कश्यप गोत्र अग्निहोत्री

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
अंटेरि	करेलुआ	१०	मन्नो	सिरौज	५
सीम	,,	८	मोती	जनसारपुर	४
भैरव	कोड़ा	८	चन्दन	हड़हा	८
बद्री	खेउरा	८	बिउता	,,	२
केदार	कठेरुवां	९	जसरम	,,	४
			मयपुरा	,,	५

। इति कश्यप गोत्र समाप्त ।

। शाँडिल्य गोत्रस्य व्याख्यानम् ।

श्री ब्रम्हाजी के पुत्र मारीचि, मारीचिके पुत्र कश्यप ने यज्ञ क्रिया था तो यज्ञ के अग्नि–कुण्डसे एक पुरुष उत्पन्न भया उसका नाम अग्नि के नाम से हुवासन धरा गया तथा उसका गोत्र कश्यप जी ने शांडिल्य प्रमाण दिया क्योंकि गोत्र अग्नि का भी शांडिल्य ही है तदन्तर उस हुवासन नाम पुरुष के बंश में अति-काल के पश्चात् एक मनोरथ नाम पुत्र प्रतापी उत्पन्न भए मनोरथ ने बुन्देलखण्ड के राजा अमरसिंह को यज्ञ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कराके उनके राज पुरोहित विश्वनाथ की कन्या से बिवाह किया और दतिया के राजा, उरछा के राजा मदावर के राजा, इन तीनों राजाओं ने मनोरथ को अपना गुरू करनेके मिमित्त बुलाया, तब मनोरथजीने तीनो राजाओं को अपना शिष्य किया, तदन्तर हमीपुर के राजपुरोहित गंगाराम की कन्या से दूसरा विवाह किया, मनोरथ का निज स्थान धतुरा ग्राम में था पुनः मनोरथ तिवारी से धतुरा के मिश्र कहाये, [मनोरथ की पहली स्त्री से पुत्र १] कमलनाभि सो कमलनाभि अपनी माता समेत मऊमें जाय बसे तिन कमलनाभि की सन्तान मऊ के मिश्र कहाए । और [मनोरथजीकी दूसरी स्त्रीसे पुत्र२] पद्मनाभि१ देवनाभि२ ये दोनों हमीरपुरके मिश्र कहाए [पद्मनाभि के पुत्र १] हरिहर, सो हमीरपुर के उपाध्याय कहाए [हरिहर के पुत्र ३] गंगाराम१ बंशीधर२ जगन्नाथ३ ये तीनों उपाध्याय हमीरपुर के कहाए, [देवनाभि के पुत्र १]सारंगधर सो हमीरपुरके मिश्र [सारंगधर के पुत्र२] त्रिपुर१ गदाधर २ सो त्रिपुर कपिलाके मिश्र गदाधर हमीरपुर के मिश्र कहाए [त्रिपुर के पुत्र ३] बाबू१ खेमकरण२ हेमनाथ३ बाबू खानीपुर के मिश्र खेमकरण भोजपुरके मिश्र, हेमनाथ हमीरपुरके मिश्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(खेमकरणके पुत्र१) दारौ सो असनी के शुक्ल कहाए (गदाधरके पुत्र२) गंगाधर१ श्रीहर्ष२ गंगाधर भोजपुरके दीक्षित, श्रीहर्ष खानीपुर के मिश्र (गंगाधर की पहली स्त्रीसे पुत्र४) बाबू१ बलिराम २ बीरेश्वर ३ उमादत्त ४ ये चारों अंटेरा में बसे व अपने अपने नाम से दीक्षित कहाए, (बाबूके पुत्र३) विद्याधर१ बनवारी २ रघुनंदन ३ ये तीनों बाबू अंटेरि के दीक्षित कहाए (बलिरामके पुत्र४) कंगू१ समाधान२ घासी३ चतुरी ४, समाधान घासी चतुरी ये तीनों अंटेरि के दीक्षित कगू बटपुर के दीक्षित, (कंगू के पुत्र ४) श्रद्धा १ पुरुषोत्तम२ माधोराम३ भट्टाचार्य ४ येचारो बटपुर के दीक्षित (श्रद्धा के पुत्र ३) चक्रपाणि १ शेखर २ श्रीचंद्र ३ ये भी दीक्षित बटपुरी (समाधानके पुत्र४) द्वन्द१ मुकुन्द२ जोगे३ बदले४ ये भी दीक्षित बटपुरी (बीरेश्वरके पुत्र५) मुरली१ गिरधारी२ नित्यानद३ शिरोमणि ४ जगनू ५, ये पांचो दीक्षित बीरेश्वर के बटपुरी (मुरली के पुत्र ४) लघु १ बिरजू २ मोहन ३ देवदत्त ४ ये दीक्षित बटपुर के (जगनू के पुत्र २) धरमू १ शरमू २ ये दोनों दीक्षित बटपुरी, (धरमूके पुत्र १) जयकृष्ण (जयकृष्ण के पुत्र ५) यज्ञदत्त १ ग्रहपति २ धीरेश्वर ३ जगपति ४ क्षेमकरण५, क्षेम-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करणके पुत्र३) रूपनारायण१ सूर्यमणि२ दीनानाथ३ (दीनानाथ के पुत्र४) गोकुल १ समाधान २ देवकी-नन्दन३ देवदत्त४, (गोकुलके पुत्र२)कृपाराम१ भजन २, (भजन के पुत्र २) काशीराम १ रामप्रसाद २ ये सब बटपुर के दीक्षित, [उमादत्त के पुत्र ४] बधे १ केशी २ यादव ३ गोबिन्द ४, ये उमादत्त दीक्षित बटपुर के कहाए [गंगाधर की दूसरी स्त्री घेतली नाम से पुत्र २] गोपी १ हंसराज २, गोपी अपनी माता समेत नौगायें में रहे ते मिश्र कहाए, हंसराम अटेरि में बसे ते दीक्षित, [श्रीहर्ष के पुत्र ४] परशू १ हिम कर २ ललकर ३ गोपीनाथ ४, परशू खानीपुर के मिश्र, हिमकर भटेउरा के मिश्र, ललकन और गोपी नाथ असनी के मिश्र कहाए, [हिमकर के पुत्र ३] शंकर १ क्षेमराज २ जयभद्र ३, ये तीनों हिमकर के मिश्र भटेउरा वाले, [जयभद्रके पुत्र २] लछनू१ बचनू २, ये दोनों गेगासों के मिश्र, [परशू के पुत्र ४] पदम पाणि१ कमलपाणि२ चक्रपाणि३ बंशीधर४, ये चारो खानीपुर के मिश्र, [कमलपाणि के पुत्र ४] लालमणि १ लोकनाथ २ विश्वनाथ ३ चर्तुभुज ४, लालमणि लोकनाथ बिश्वनाथ असनी में बसेते असनी के परसू वाले मिश्र कहाए, चर्तुभुज कन्नौज के मिश्र कहाये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[चर्तुभुजके पुत्र ४] मुक्खे १ मुन्ने २ बुधे ३ दीपा ४] ये चारों मीरासराय में रहे ते मीरा की सराय के मिश्र कहाये, बाले [मुक्खे के पुत्र २] गागन १ पाटन २ ये दोनों परशू के रामपुरी मिश्र [गोपीनाथ के पुत्र ३] मथुरानाथ १ प्रभाकर २ श्रीधर ३ ये तीनों कन्नौज के गोपीनाथीमिश्र [श्रीधर के पुत्र १] चर्तुभुज ते असनी में धोबिहा के गोपीनाथी मिश्र, [प्रभाकर के पुत्र २] श्रीकण्ठ १ माधव २, ये दोनों गोपालपुर के मिश्र, [श्रीकण्ठ के पुत्र ३] प्राँणनाथ १ केशौराम २ हरिनन्दन ३ ये मौजमाबाद के मिश्र [प्रांणनाथ के पुत्र २] गदाधर १ लक्ष्मण २, ये दोनों खानीपुर के मिश्र कहाये । इति ।

शाँडिल्य गोत्र मिश्रों का असामी स्थान विश्वा लिख्यते

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिस्वा
मनोरथ	धतुरा	४	श्रीहर्ष	खानीपुर	७
कमलनाभि	मऊ	४	गोपी	नौगांव, घेतली	१३
पद्मनाभि	हमीरपुर	६	परश्	खानीपुर	२०
देवनाभि	,,	५	हिमकर	भटेउरा	१९
हारगधर	,,	४	लल्कर	असनी	१६
त्रिपुर	कम्पिला	१०	गोपीनाथ	,,	१८
गदाधर	हमीरपुर	५	शकर	भटेउरा, हिमकर	१९
बाबू	खानीपुर	८	क्षेमराम	असनी ,,	१८
खेमकण	भोजपुर	४	जयभद्र	गेगासों ,,	१६
हेमनाथ	हमीरपुर	५	लछनू	,, ,,	१७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
कछन	गेगासों, हिमकर	१७	गांगन	मीरासराय, रामपुरीपरसू	२०
पद्मपाणि	खानीपुर, परक्	२०	पांटन	"	२०
कमलपाणि	,	२०	मथुरानाथ	कन्नौज, गोपीनाथी	१६
चक्रपाणि	,	२०	प्रभाकर		१७
बंशीधर	,	२०	श्रीधर	गोपीनाथ, धोंबिहा	१५
लालमणि	असनी, परसू	१९	चतुर्भुज	अ० धोंविहागोपनाथी	१७
लोकनाथ	,	२०	श्रीकण्ठ	गोपालपुर गोपनाथी	१५
विश्वनाथ	,	२०	माधव	,	१५
चतुर्भुज	कन्नौज परसू	२०	प्राणनाथ	मौजमाबाद गोपनाथी	१२
मुक्खे	मीरासराँय परसू	२०	केशौराम	"	१३
मुन्ने	,	२०	हरिनन्दन	"	१४
बुधे	,	१९	गदाधर	खानीपुर	१०
दीपा	,	१९	लक्ष्मण	"	१०
			सांगिता	बनकेशरी	३

शाँडिल्य गोत्र दीक्षित

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
गंगाधर	भोजपुर	५	चतुरी	अन्टेरि	१८
बाबू	अन्टेरि	१८	श्रद्धा	बटपुर कगू	२०
बलिराम	,	१८	पुरुषोत्तम	,	२०
बीरेश्वर	,	१८	माधौराम	,	२०
उमादत्त	,	१५	भट्टाचार्य	,	२०
हंसराम	,	१५	चक्रपाणि	,	१९
विद्याधर	,	१६	शेखर	,	१९
बनवारी	,	१०	श्रीचन्द	,	१८
रघुनन्दन	,	१६	द्वन्द	बटपुर, समाधान	७
कंग	बटपूर	२०	मुकुन्द	,	६
समाधान	अन्टेरि	१४	जागे	,	७
घासी	,	१८	बदले	,	८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	विश्वा ।	असामी	स्थान	बिश्वा
मुरली	बटपुर, बीरेश्वर	२० ।	क्षेमकरण	बटपुर, बीरेश्वर	१४
गिरिधर	,	२० ।	रूपनारायण	,	१४
नित्यानन्द	,	२० ।	सूर्यमणि	,	१५
शिरोमणि	,	२० ।	दीनानाथ	,	१४
जगनू	,	२० ।	गोकुल	,	१२
लच्छू	,	१७ ।	समाधान	,	१२
विरजू	,	१८ ।	देवकीनन्दन	,	१२
मोहन	,	१८ ।	देवदत्त	,	१३
देवदत्त	,	१७ ।	कृपाराम	,	१२
धमू	,	१८ ।	भजन	,	११
शमू	,	१८ ।	काशीप्रसाद	,	१०
जैकृष्ण	,	१५ ।	रामप्रसाद	,	१०
यज्ञदत्त	,	१४ ।	बुधे	बटपुर उमादत्त	१६
ग्रहपति	,	१५ ।	केशी	,	१७
धीरेश्वर	,	१५ ।	यादव	,	१६
ज्जगपति	,	१६ ।	गोविन्द	,	१५

शांडिल्य गोत्र उपाध्याय

हरिहर	हमीरपुर	३ ।	॥ शांडिल्य गोत्र अवस्थी ॥		
गांगाराम	,	३ ।	धतुरा		२
गांगाराम	,	३ ।	कठौता		२
काशीधर	,	३ ।	अमिलागहनी		२
जगन्नाथ	,	३ ।	॥ शांडिल्य गोत्र अग्निहोत्री ॥		
	चलौली	२ ।	देउता		२
	लखनऊ	२ ।	जसराम		२
॥ शांडिल्य गोत्र तिवारी ॥		।	भयपुरा		४
	बनिगांव	२ ।	॥ शांडिल्य गोत्र शुक्ला ॥		
	धतुरा	२ ।	बारौ	असनी	४
	कठौता	२ ।			

॥ इति शांडिल्य गोत्र समाप्त ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथ सांकृत गोत्रस्य व्याख्यानम्

ब्रम्हा जी के बंश में सांख्यायन मुनि भए [सांख्यायन के पुत्र १] गगन, गगन का दूसरा नाम गौवें । 'गगन के पुत्र साँकृत, सांकृत के पुत्र जीवाश्व, जीवाश्व के बंश में प्रथ्वीधर शाकद्वीप ब्राम्हण कुड़हरि में नरमोदरी में निवास किया फिर कौशिकपुर के राजा ने प्रथ्वीधर को बुलाया यज्ञ करवाया और प्रथ्वीधर के गुण को देख त्रिगुण पति के अवस्थीका पद दिया सो प्रथ्वीधर त्रिगुणपति के अवस्थी कौशिकपुर के कहाए । प्रथ्वीधर के पुत्र १, नाभू तिन नाभू को प्रथ्वीधर ने पढ़ाया और अधिक विद्वान होने के निमित्त मनीराम बाजपेई के पास पढ़ने को भेजा तब मनीराम बाजपेई ने नाभू को पढ़ाया और नाभ को अत्यन्त रूपवान गुणवान शीलवान देख कर अपनी कन्या भुवनेश्वरी नाभू को विवाह दी और अपने निकट पुरौनियां ग्राममें बसाय शुक्ल की पदवी दी तब से नाभू शुक्ल पुरौनिया के विख्यात भए । नाभू शुक्ल के पुत्र २, बुजरुक १ खुर्दपति २ बुजरुक गोपालपुर के शुक्ल, खुर्दपति बहारपुर के शुक्ल कहाये, 'बुजरुक के पुत्र ३, क्षत्रपति १ आनन्दबन २ मुक्ता ३, क्षत्रपति और मुक्ता पुरौनियां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मुबला पुरौनियां नभेले के शुक्ल, आनंदवन अकबर-पुर के शुक्ल (क्षत्रपति के पुत्र ३) गंगाराम १ माधव राम २ शालिगराम ३, गंगाराम डोमनपुर के शुक्ल, माधवराम असनी के शुक्ल, शालिगराम नरवल के शुक्ल, (गंगाराम के पुत्र२) रघुबंश१ हरिबंश२ रघुवंश फतहाबादी शुक्ल, हरिबंश १ डोमनपुर के शुक्ल (मुक्तके पुत्र१) रामजक्र सो गहिरीके शुक्ल(खुर्दपति के पुत्र३) खेमन१ बहेरू२ रूपन३, खेमनगौराके शुक्ल बहेरूगहिरी के शुक्ल, रूपन जाजमऊ के शुक्ल (खेमन के पुत्र३) गणपति १ हरिब्रम्ह २ ईश्वरी ३ गणपति फतहाबादी शुक्ल, हरिब्रम्ह अमोहाके शुक्ल, ईश्वरी असनी गेगासो के शुक्ल, (गणपति के पुत्र ३) हन्नू १ बंदन २ दुलीचंद ३ (दुलीचंद के पुत्र २) भाऊ १ शीतल २ ये पांचो फतुहाबादी शुक्ल, 'बहेरूशुक्ल के पुत्र५, देवीदीन१ दरियाव २ जवाहिर ३ जानकी ४ भीषम५ देवीदीन गौरा के शुक्ल, दरियाव अवाब के शुक्ल, जवाहिर गदनपुर के शुक्ल, जानकी अम्बर-पुर के शुक्ल, भीषम गहिरीके शुक्ल 'रूपन शुक्ल के पुत्र२) घना१ घनश्याम२, घना गौरा के शुक्ल घन-श्याम जाजमऊ के शुक्ल,(घना के पुत्र २, कृष्णी १ त्रिभुणपति २ ब्रजलाल ३, कृष्णी कौशिकपुर के मिश्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्रिगुणायति कौशिकपुरके अवस्थी, ब्रजलाल बिजौली के दुबे, [घनश्याम शुक्लके पुत्र ३] बीर१ बनवारी २ ब्रजपति३, बीर जाजमऊ के मिश्र, बनवारी चचेड़ी के मिश्र, प्रजापति इटावा के मिश्र । इति ।

सांकृत गोत्र शुक्लोंका असामी स्थान बिशवा लिख्यते

असामी	स्थान	बिस्वा ।	असामी	स्थान	बिश्वा
नाभू	पुरंनियां	४ ।	दुलीचन्द	फतुहाबादी पुरंनियां	२०
बुजरुक	गोपालपुरपुरंनियाँ	१८ ।	माख	फतुहाबादी	२०
खर्दपति	बहारपुर ,	१२ ।	सीतल	,	२०
क्षत्रपति	मभेल ,	१५ ।	देवीदीन	गौरा	९
आनन्नबन	अकबरपुर ,	१५ ।	दरियाव	अवावा	४
मुक्ता	नभेला ,	१५ ।	जवाहिर	गूदरपुर	७
गंगाराम	ढौमनपुर ,	१६ ।	जानकी	अम्बरपुर	८
माधवराम	असनी ,	१८ ।	मीषण	गोहरी	८
शालिगराम	नरवल ,	२० ।	घनो	गौरा	१८
रघुबंश	फतुहा ,	१९ ।	घनश्याम	जाजमऊ	१२
हरिबंश	डोमनपुर ,	१४ ।	। सांकृत गोत्र मिश्र ।		
रामचक्र	गहिरो ,	५ ।	कृष्णो	कौशिकपुर	५
खेमन	गारा ,	१० ।	बीर	जाजमऊ	२०
बहेरू	गहिरो ,	५ ।	बनवारी	चचेड़ा	१५
रूपन	जाजमऊ ,	१० ।	प्रजापति	इटावा	१५
गणपति	फतुह बादी ,	२० ।			
हरिब्रम्ह	अमोहा(पुरोनियां	२० ।	। सांकृत गोत्र अवस्थी ।		
ईश्वरी	असनीगेगासो ,	१९ ।	प्रथ्वीधर	कौशिकपुरत्रिगुणायति	३
हन्नू	फतुहाबादी ,	२० ।	त्रिगुणापति	कौशिकपुर	५
बन्दन	फतुहाबादी ,	२० ।	ब्रजलाल	बिजौली के दुबे	५

।। इति सांकृत गोत्र समाप्त ।।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपमन्यु गोत्रस्य व्याख्यानम्

ब्रम्हा के पुत्र वशिष्ठ, वशिष्ठ के शिष्य ब्याघ्र पाद, तिनके पुत्र उपमन्यु, उपमन्यु के पुत्र सिन्धुप्रद, तिनके बश में अतिकाल उपरांत एक भूपा नाम के पन्डित प्रतापी प्रसिद्ध भए, तिन भूपा जी ने यमुना पार पिनाकपुर में धर्मपाल नाम महिपाल को जुजुहूत पुर में शिष्य कर दीक्षा दिया और यज्ञ कराया तब से भूपा जी दीक्षित कहे गये, तदन्तर उसी राजा के प्रोहित की कन्या से विवाह किया. [भूपा के पुत्र २] जानी १ यज्ञेश्वर २, जानी जानापुर के पाठक, यज्ञेश्वर यज्ञपुर के दुबे कहाए [जानी के पुत्र २] नभऊ १ गदाधर २, नभऊ दरियाबाद के अवस्थी, गदाधर सेठपुर के पाठक [नभऊ के पुत्र ३] कमल १ नल२ भट्ठ ३ कमल जुजुहूतपुर के अवस्थी, नल एकड़ला के त्रिवेदी राशि बैठारे भट्ठ के पुत्र जगन्नाथ सो भट्ठ और जगन्नाथ चदनपुर के बाजपेई कहलाये । [कमल के पुत्र१] गोपी जुजुहूतपुर के अवस्थी [गोपी के पुत्र २] गोसल १ धर्माई २, गोसल बेनवामऊ के पाठक, धर्माई मौरायें के अवस्थी [धर्माई की पहिली स्तीसेपुत्र८] देवर्षि१सुरेश्वर२ सिद्धनाथ३ खांडे४ जीवन ५ केदार६ नट्ट७ ब्रम्हदत्त८, देवर्षि सरवन के अवस्थी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुरेश्वर जयगांव के अवस्थी, सिद्धनाथ दरियाबादी अवस्थी, खांड़े, जीवन मतिपुर के अवस्थी, केदार, नंदू गौरा के अवस्थी, ब्रम्हदत्त मोरागांव के अवस्थी कहाए, ब्रम्हदत्त की पहली स्त्री से जो सन्तान भई सो अठभैया अवस्थी कहाए, ब्रम्हदत्त की दूसरीस्त्रीसेपुत्र३ परशुराम१ कान्हकुमार२ दीनानाथ ३ परशराम कान्ह कुमार ये दोनों सिधपुरके अवस्थी, दीनानाथ एकड़ला के अवस्थी (परशुराम के पुत्र २) बड़े १ गोपाल २ ये दोनों त्यूरासी के अवस्थी (बड़े के पुत्र४) भोलानाथ १ जगपति २ रामप्रसाद ३ देबीदत्त ४ ये सब त्यूरासी के अवस्थी (कान्हकुमार के पुत्र २) माधव१ माते २ (माधव के पुत्र ३) बाबू १ बांके २ मुनीश३ ये सब त्यूराशी के अवस्थी, माते त्यूराशी के अवस्थी कहाए (दीनानाथ के पुत्र १) प्रभाकर (प्रभाकर के पुत्र ८) नारायण १ लक्षमण २ जगनी ३ रकनी ४ सगुनी५ मुरारी ६ उदयनाथ७ प्रेमनाथ ८ ये सब प्रभाकर के अवस्थी त्यूराशी वाले कहाए (धर्माई की दूसरी स्त्री से पुत्र ३) शिवदत्त १ देवदत्त २ यज्ञदत्त ३ शिव-दत्त की सन्तान मिश्र, देवदत्त के बंश में दुबे और अग्निहोत्री यज्ञदत्त के कुल में बाजपेई कहाए शिव-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दत्त क पुत्र १) हरिदत्त सो पाठक जिनवासऊ के कहाए (हरिदत्त के पुत्र ४) सहतावन १ ब्रन्दाबन २ पदमेन्द्र ३ सर्वाधार ४, सहतावन के शरिमऊ के मिश्र ब्रन्दावन लखपुराके मिश्र पदमेन्द्र पर्सुहिया के मिश्र सर्वाधार गुर्दाबान के मिश्र ।

देवदत्त की पहली स्त्री से पुत्र १) बिहारी सो पसिगवा के दुबे कहाए (बिहारी के पुत्र २) थलई १ रुपई २ थलई पहुवा के दीक्षित, रुपई भैंसई के दुबे कहाए (रुपईके पुत्र २) दामोदर १ कवितांडव२ दामोदर एकड़ला के त्रिवेदी कवितांडव विष्णुपुर के दुबे (दामोदर के पुत्र ४) साहेब१ बादे २ मडन३ प्रयाग४ (प्रयाग के पुत्र २) हरी १ रघुनाथ २ (हरी के पुत्र ६) मानिक१ श्याम२ बदाम३ हीरा४ पुरन्दर५ आत्माराम ६ ये सब त्रिवेदी एकड़ला के अपने २ नाम से प्रसिद्ध भए तिनमें हरी के बदाम वाले त्रिवेदी उत्तम मानिक श्याम तथा पुरन्दर के मध्योत्तम आत्माराम प्रयाग व मडन के मध्यम, वादे व साहेब के कनिष्ट इति त्रिवेदी । अथ द्विवेदी(कविताँडव दुबे के पुत्र २) कला१ देवराज२, कला कन्नौज में बसे ते कन्नौज के दुबे, देवराज जैराजमऊ के दुबे, (कला के पुत्र २) कुन्दन१ अभई२, कुन्दन कचिया के दुबे, अभई नरा-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तमपुरके दुबे [देवराजके पुत्र४] बासदेव१ घरवास२ बाल्मीक ३ जनार्दन ४, बासुदेव केशरिमऊ के दुबे घरवास इटावा के दुबे बाल्मीकख्यूराके दीक्षित, जनार्दन रिवाड़ी के अग्निहोत्री कहाए [घरवासके पुत्र३] घनश्याम १ चन्द्रमणि २ मनऊ ३, घनश्याम चंद्रमणि घरवास इटावाके दुबे, मनऊ नरोत्तमपुर घरवास के दुबे कहाए, [मनऊ के पुत्र २] जगनू १ नरोत्तम २ ये दोनों ग्रामयाचकी करनेसे मर्यादाहीन भए, जगन् चिलौली के दुबे, नरोत्तम भैंसई के दुबे, [नरोत्तम के पुत्र ३] बसई१ जानकी२ बाबू ३ [बाबू के पुत्र १] बल्लू, ये सब सपई में रहे और भैंसई के दुबे कहाए, [बल्लू के पुत्र३] चन्द्र १ बद्री २ मकरन्द ३ ये दोनों गंगापार भोजीपुरा के निकट बिलवार के दुबे, बद्री के पुत्र १, सेवकी सो उन्नाव के दुबे । इति दुबे । [बाल्मीक दीक्षित के पुत्र२] शांति१ संतोष २, शांति के दरियाबादी दीक्षित, संतोष के नैमिष के दीक्षित [जर्नादन अग्निहोत्रीके पुत्र २] चन्दन १ मतिकरण२ चन्दन उज्जैन के अग्निहोत्री, मतिकर ऊगू के अग्निहोत्री कहाए, देवदत्तकी दूसरीस्त्रीसे पुत्र४' जीवन १ जगनी२ किदर३ हरसुख ४, जीवन रिवाड़ीके जगनी जौनपुर के, किंदर दरियाबाद के, हरसुख बदर्का के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अग्निहोत्री [जगती के पुत्र ३] हीरामणि १ सिरोमणि २ दत्तू ३ ये तीनों जौनपुर के अग्निहोत्री, [किंदर के पुत्र १] बाबूराम दरियाबादी अग्निहोत्री कहाये यज्ञदत्त के पुत्र ५] बिष्णुशर्म १ देवशर्म २ शिवधर्म ३ महाशर्म ४ लक्ष्मीशर्म ५, ये सब लखनऊ में बाजपेई पुरवा के, [विष्णुशर्म बाजपेई के पुत्र १] ओझेश्वर [ओझेश्वर के पुत्र १ छगे [छगे के पुत्र २] रामभद्र १ प्रीतिकर २ ये लखनऊ के बाजपेई [रामभद्र के पुत्र २] रामकिशन १ कमलनयन २, ये दोनों लखनऊ में ऊचे के बाजपेई [प्रीतिकर के पुत्र ६] गणपति १ पीताम्बर २ नरहरि ३ बेनीदत्त ४ रामचन्द्र ५ ये पांचो लखनऊमे ऊचे के बाजपेई छठे पुत्र बुद्धिशर्म लखनऊ में खाले के बाजपेई [बुद्धिशर्म के पुत्र ६] लाला १ लक्ष्मण २ लौकी ३ शंकर ४ भोखू ५ मनीराम ६, ये सब लखनऊ में खालेके बाजपेई [शंकरके पुत्र ३, चूड़ा १ दीका २ देवदत्त ३, ये भी तीनों लखनऊमें खाले के बाजपेई कहाए [देवशर्म बाजपेई के पुत्र ३ मदन १ माखन मंगली ३, मदन दिवरईके बाजपेई माखन गुदड़ी के बाजपेई मगली रामपुर के बाजपेयी परन्तु ये तीनों ही अपने को हमेशा लखनऊ के बाजपेई ही कहते हैं । शिव शर्म बाजपेयी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केपुत्रत्र ३)सुन्दर१ गगादास२ रमण३ ये तीनों लखनऊ के पुरवा वाले बाजपेई कहाए, (महाशर्म बाजपेई के पुत्र ३, तिर्मल१ किसई २ कुलमणि ३ तिर्मल खटोलहा के बाजपेई, किसई, कुलमणि बैदहा के बाजपेई (कुलमणि के पुत्र ५) गुपई १ मथुरी २ ललकर ३ काशीराम ४ रघुनाथ ५, गुपई, ललकर बैदहाके मथुरी गोपालपुस के काशीराम मनीराम चिलौला के बाजपेई कहाए (काशीराम के पुत्र ६) लछनी १ बछनी२ गंगू ३ यादव ४ रघुनाथ ५ शिवदयाल ६, ये सब चिलौला के बाजपेई, (रघुनाथ के पुत्र ३)प्रांणसुख१ धूमल २ चूड़े ३, ये तीनों अहमदाबाद में बसे और काशीराम के बाजपेई कहाये (चूड़े के पुत्र ३) शिवनन्दन १ स्यूनी २ दिवानी ३, ये तीनों असनी में बसे ते असनी के बाजपेई, ये सब काशीराम की सन्तान हैं (मनीराम बाजपेई की पहली स्त्री से पुत्र ३] लाले १ बाले २ मनोरथ ३, ये तीनों बाजपेई मनीराम की भौजिया कहाए [मनीरामने दूसरा बिवाह बटेश्वर में किया तिस स्त्रीसे पुत्र २] नित्यानन्द१ महामुनि२ ये दोनों अपने २ नाम से बटेश्वर के बाजपेई कहाए। [महामुनि के पुत्र ५] चन्द्र १ आनन्द २ लालू३ घनश्याम ४ माधवराम ४ ये सब बाजपेई महामुनि वाले

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बटेश्वर के [लालू के पुत्र२] कामदेव १ रामदेव२ ये भी दोनों बाजपेई बटेश्वरके लालू वाले कहाए[लक्ष्मी शर्म बाजपेई के पुत्र१] कृष्णशर्म, कृष्णशर्म की जेठी स्त्रीसे पुत्र१]पोथा सो असनी के बाजपेई [पोथा के पुत्र१] जगनायक बाजपेई बाजपुरके [कृष्णशर्म की लहुरी स्त्रीसे पुत्र४] हीरा१ बीसा२ धन्नी३ तारा ४ ये चारो असनी के बाजपेई,[हीरा के पुत्र४] चत्ते१ मत्ते२ बीरे३ भगोले४, चत्ते मत्ते बीरे असनी, हीरा के बाजपेई, भगोले बिहार हीरा के बाजपेई, [चत्ते-के पुत्र २] परशुराम१ मुरलीधर२ ये भी दोनों असनी हीरा क बाजपेई, [बीसाके पुत्र४]कमले१ उर्बीधर२ केशव३ गयादत्त ४, कमले मौरहा बीसा के बाजपेई शेष तीनों असनी बीसा के बाजपेई [कमल के पुत्र १) परमेश्वरी मौरहा बीसा के बाजपेई, (धन्नी के पुत्र४) भावनाथ१ उदयनाथ २ गिरधर३ मुसई४ ये चारो मौजमावादी धन्नी के बाजपेई कहाए, (ताराके पुत्रा१) रघुनन्दन सो हाजीपुर तारा के बाजपेई कहाए । जानी के दूसरे पुत्रा गदाधर तिनके पुत्र ३ कन्दर्प १ सिताबू २ बच्चू३ कन्दर्प नसुरा के पाठक (सिताबू के पुत्रा २) पतिराखन १ ब्रजलाल२ पतिरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खन शाहाबाद के जानापुरी पाठक ब्रजलाल मौरायें के जानापुरी पाठक कहाये । इति ।

उपमन्यु गोत्र अवस्थियों का असामी स्थान बिश्वा लिख्यते ।

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
नमऊ	दरियाद	६	रामप्रसाद	त्योरासी, बड़े के	२०
कमल	जुजुहापुर	५	देवीदत्त	, ,	२०
गोपी	,	५	उद्धव	त्योरासी, गोपाल	१९
धर्माई	मौरांव	५	माधव	, ,	२०
देवर्षि	सरवन	१०	माते	, ,	२०
सुरेश्वर	जयगांव	१०	बाबू	त्योरासी, माधो	२०
सिद्धिनाथ	दरियाबाद	१०	बांके	, ,	२०
बांड़े	मतिपुर	७	मुनीश	, ,	२०
जीवन	,	७	प्रभाकर	त्योरासी	२०
केदार	गौरा	१०	नारायण	त्योरासी प्रभाकर	१८
नन्दू	,	८	लक्ष्मण	, ,	१८
ब्रम्हदत्त	मौरांव	१०	जगनी	, ,	१९
अठभैया	ब्रम्हदत्त मौरांव	१०	रमनी	, ,	१९
परशराम	सिधपुर	१०	सगनी	, ,	१८
कान्हकुमार	,	१०	मुरारी	, ,	२०
दीनानाथ	एकड़ला	१०	उदयनाथ	, ,	२०
बड़े	त्योरासी	१७	प्रेमनाथ	, ,	१८
गोपाल	,	१७	जगवशी	औमी	२
भोलानाथ	, बड़े के	२०	रघुवशी	बिलौरा	५
जगपति	, ,	२०	परिवार	,	५

।। उपमन्यु गोत्र मिश्र ।।

शिवदन्त	मौरांव	५	सर्वाधार	गुर्दबान	५
सहतावन	केशरिमऊ	५	यमराज	दरियाद	२
ब्रम्हावन	ललपुरा	५	लकाडाही	गुर्दबान	२
पदमेन्द्र	पसूंहिया	३			

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपमन्यु गोत्र बाजपेयियों का असामी स्थान विस्वा लिख्यते

असामी	स्थान	बिस्वा	असामी	स्थान	विस्वा
भट्ट	चन्दनपर	५	चूड़ा	लखनऊ खाले	२०
जगन्नाथ	,	१२	टीका	, ,	२०
यज्ञदत्त	मौरांव	५	देवदत्त	, ,	२०
विष्णुशर्म	लखनऊ पुरवा	१७	मदन	दिवरई	१५
शिवशर्म	, ,	१८	माखन	कुड़री	१५
देवशर्म	, ,	१८	मंगली	रामपुर	१५
महाशर्म	, ,	१७	सुन्दर	लखनऊ पुरवा	१८
लक्ष्मीशर्म	, ,	१८	गगादास	, ,	१४
ओझश्वर	गौरा पुरवा	१७	रमण	, ,	१५
छंगे	, ,	१६	निर्मल	खटोलहा	१३
रामभद्र	लखनऊ	२०	किसई	बेंदहा	१८
प्रीतिकर	,	२०	कुलमणि	,	१८
रामकृष्ण	ऊंचे रामभद्र	१९	गुतई	,	१५
कमलनयन	,	१९	मथुरी	गोपालपुर	१५
गणपति	, प्रीतिकर	१८	ललकर	बेंदहा	१८
नरहरि	, ,	१८	काशीराम	चिलौला	१६
वेणीदत्त	, ,	१८	मनीराम	,	१५
पीताम्बर	, ,	१९	लछनी	चिलौला काशी०	१७
रामचन्द्र	, ,	२०	बछनी	, ,	१७
बुद्धिशर्म	लखनऊ खाले के	२०	गगू	, ,	१७
लाला	, ,	२०	यादव	, ,	१६
लक्ष्मण	, ,	२०	रघुनाथ	, ,	१७
लौकी	, ,	२०	शिवदयाल	, ,	१६
शंकर	, ,	२०	प्राणसुख	अहमदाबाद का०	१७
मनीराम	, ,	२०	धूमल	, ,	१८
मीख	, ,	२०	चूड़े	, ,	१८
शिवानन्दन	असनी काशीराम	१७	स्यूनी	असनी काशीराम	१७

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
दिदनी	असनी (काशीराम)	१७	घन्नी	असनी	१९
लाले	मौजिया [मनीराम]	१७	तारा	असनी	१७
बाले	, ,	१६	चत्ते	, हीरा	२०
मनोरथ	, ,	१५	मत्ते	, ,	२०
नित्यानन्द	बटेश्वर	१९	बीरे	, ,	२०
महामुनि	,	१८	मगोले	बिहार ,	१९
चन्द	, महोमुनि	१८	परशुराम	असनी ,	२०
आनन्द	, ,	१८	मुरलीधर	, ,	२०
लालू	, ,	१९	कमले	मौरहा बीसा	१९
घनश्याम	, ,	१८	उर्बीधर	असनी ,	२०
माधवराम	, ,	१८	केशव	, ,	२०
कामदेव	, ,	२०	गयादत्त	, ,	२०
रामदेव	, ,	१७	परमेश्वरी	मौरहा बीसा	१९
कृष्णशर्म	लखनऊ [पुरवा]	१७	माधनाथ	मौजमाबाद धन्नी	१९
पीथा	असनी	२०	उदयनाथ	, ,	१९
जगनायक	बाजपुर, पीथा	१७	गिरधर	, ,	१८
हीरा	असनी	२०	मुसई	, ,	१८
बीता	,	२०	रघुनन्दन	हाजीपुर, तारा	१८

उपमन्यु गोत्र त्रिवेदी

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
नल	एकड़ला	५	रघुनाथ	हरी एकड़ला	१२
दामोदर	,	११	मानिक	,	१७
साहेब	हरी एकेडला	१०	श्याम	,	१६
बादे	,	१०	बदाम	एकेड़ला	२०
मण्डन	,	१२	हीरा	,	१८
प्रयाग	,	१३	पुरन्दर	,	१६
हरी	,	१९	आत्माराम	,	१४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

।। उपमन्यु गोत्र दुबे ।।

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
देवदत्त	मौरावां	५	जगनू	चिलौली	५
बिहारी	पसिगवां	७	नरोत्तम	भैंसई	५
रुपई	भैंसई	४	बसई	सपई[भैंसई]	६
कवितोडव	विष्णुपुर	१५	जानकी	’	७
कलो	कन्नौज	८	बाबू	’	१०
देवराज	जैराजमऊ	५	बल्लू	’	१२
कुन्दन	कचिया	१०	चन्द्र	बिलावर	५
अभई	नरोत्तमपुर	७	बद्री	’	३
बासुदेव	केशरिमऊ	१२	मकरन्द	’	३
घरवास	इटावा	२०	सेवकी	उन्नाव	१
घनश्याम	’ घरवास	२०		पसमा	८
चन्द्रमणि	’	२०		बरुवा	४
मनऊ	नरोत्तमपुर	१९	मीठापुर के उपाध्याय		२

।। उपमन्यु गोत्र अग्निहोत्री ।

जनार्दन	रिवाड़ो	१०	शिरोमणि	जौनपुर	७
चन्दन	उज्जैन	१०	दत्तू	’	७
मतिकर	ऊगू	११	किदर	दरियाबाद	१०
जीवन	रिवाड़ो	११	बाबूराम	’	८
जगनो	जौनपुर	८	हरसुख	बदर्का	११
हीरामणि	’	७	देवदत्त	एकड़ला	१०

।। उपमन्यु गोत्र पाठक ।।

गोसल	बेनवामऊ	४	बच्चू	अंगई	१०
हरिदत्त	’	५	पतिराखनशाहाबादजानोपुरी		५
कन्दर्प	नसुरा	५	ब्रजलाल	मौरांव	’ ८
सतिबाबू	जानोपुर	५		सेठपुर	’ १०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ उपमन्यु गोत्र दीक्षित ॥

असामी	स्थान	बिस्वा ।	असामी	स्थान	बिस्वा
भूपा	जुजुहातपुर	५ ।	घालमील	खूरा	८
गदाधर	,	५ ।	शांति	दरियाबाद	१०
बलई	पहुवा	१० ।	सन्तोष	नैमिष	७

॥ इति उपमन्यु गोत्र समाप्त ॥

। भरद्वाज गोत्रस्य व्याख्यानम् ।

श्री ब्रम्हा जी के पुत्र अंगिरा, अंगिरा के ब्रहस्पति, ब्रहस्पति के भरद्वाज तिनके बश में द्रोणाचार्य, द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा सो अश्वत्थामा पांडे कहाये, अश्वत्थामा के बंश म बहुत काल के पश्चात् दो सत्याधार १ बासदेव २ अति प्रतापी उत्पन्न भए और ये दोनों शुक्ल तरीके कहाए बासदेव के पुत्र१) गुणाकर सो बशथी के पांडे कहाए, गुणाकर के पुत्र पौत्रादि दस ग्रामोंमें रहे इसस गुणाकरके दस स्थान भए ग्रामोंके नाम बंशथी१ अमरा२ गौरा३ पटियारी ४ कपिला५ भीष्मपुर ६ बेला ७ कन्नौज ८ पाली ९ पहिलिया १० गुणाकर के पुत्र जगदेव बंशथी में बसे तिनके स्त्री पहिली स्त्री से पुत्र १ भास्कर भास्कर के पुत्रा दो बछऊ १ कुलीन २ ये दोनों भीषमपुर में जाय बसे, ते भीषमपुर के पाँडे कहाए । (जगदेव की दूसरी स्त्री से पुत्रा ३) लाला१ रामनाथ२ भोज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राज३ लाला गौराके पांडे रामनाथ पटियारी के पांडे भोजराज कम्पिला के पांडे कहाये (रामनाथ के पुत्र ४) मानू १ कुण्ठबन २ कृष्णदीन ३ सुक्खू ४ मानू बेला के पाँडे कुण्ठवन पटियारी के पांडे कृष्णदीन पाली के पाँडे सुक्खू डौड़ियाखेरे के पाँडे (भोजराज के पुत्र २) पूरण१ भैरव२, पूरण लखनऊ के पाँडे भैरव असनी में खोरि गली में बसे ते खोरि के पांडे कहाए, (पूरणके पुत्र८) बीरेश्वर१ श्रीकृष्ण२शीतल ३ गिरधर४ परम५ हरिनाथ६ मणिराम७ गंगारामट बीरेश्वर, श्रीकृष्ण, शीतल, परम, हरिनाथ गेगासों के पांडे, गिरधर शिवपुर गेगासों के पांडे, मणिराम गंगा राम यूतीपार गेगासों के पांडे कहाए, (गगाराम के पुत्र२) उद्धहरणनाथ१ रामेश्वर २ उद्धहरणनाथ के सोंनहा गेगासोंके पाँडे रामेश्वरने नदिया शाँतीपुरमें शास्त्र पढ़े तहाँ भट्टाचार्य पाँडे लखनऊ ऊचटोलाके कहाए (रामेश्वर के पुत्र १) गोपीकान्त, गोपीकाँत पुत्र७) बंशीधर१ मुरलीधर२ मतिकृष्ण३ शिरोमणि ४ चन्द्रमौलि५ कमलापति६ श्रीपति७ ये सब कन्नौज में बसे ते कन्नौज के भट्टाचार्य के पाँडे कहाये । (भैरवके पुत्र ३] प्राणनाथ१ परमकृष्ण२ जगदीश३ प्राणनाथ परमकृष्ण गेगासों के पाँडे, जगदीश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अमराकेपांडे कहाए(परमकृष्णके पुत्र२, भूरे१ भाष्कर २ येदोनों गेगासोंके पांडे कहाए(भूरेके पुत्र५) लोटे १ बाले२ गगू३ कान्हर४ गदाधर५ येसब असनीमें खोरि केपांडे कहाए (भाष्कर के पुत्र६) लाले १ नरोत्तम २ टोंडर३ कंधर४ विश्वनाथ५ मनीराम६ लाले कंधरये कन्नौजमें खोरिके पांडे, टोडर कन्नौज खोरिके टोड-रहा पांडे, नरोत्तम असनी वाले खोरिके पांडे मनी-राम तूतीपार खोरिके पाडे विश्वनाथ गेगासों में खोर के पाँडे कहाए (जगदीश के पुत्र४) लाला १ राम २ बीरे३ जीवन४ ये चारो अमराके पांडे कहाए (लाला के पुत्र२) लालू१ बीरभद्र२ लालू बिलासपुरके पांडे वीरभद्र अमरा के पाँडे (राम के पुत्र४) विहारी १ दलुपति२ यशपति३ दिबोल४, बिहारी मौरायके पांडे दलपति नारायणपुर के पांडे यशमति नौगांवके पांडे दिबोल विहगपुरके पाँडे (बीरे के पुत्र७) नित्यानंद१ छेदी २ मथनू ३ गंगा ४ खजन ५ ज्वालाना ६ बद्री नाथ ७ नित्यानन्द इटौजा के पांडे, छेदी बागीशपुर के पांडे, मथनू बनगांव के पांडें, गगा चम्पापुर के पांडे, खंजन मनोह के पांडे, ज्वालानाथ नोथपुर के पांडे, बद्रीनाथ हरिदासपुर के पांडे, (मथनूके पुत्र१) जयदेव, सो सवाइजपुर के पांडे (जीवन के पुत्र ६)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोती१ मंशा२ चेतन ३ बचनू ४ केशरी ५ शिवा ६ मोती लखीमपुरके पाँडे मंशा बिरसापुरके पाँडे चेतन किन्तूरियाके पांडे बचनू बररीके पांडे केशरी जहानाबाद के पांडे शिवा बगरा के पांडे [शिवा के पुत्र१] भुजेल सो पहितिहा के पांडे कहाए [सुखमन के पुत्र३] बिहारी१ कोमल२ गिरधर३ बिहारी बेला के कोमल भुसौरा के गिरधर मौरांव के पांड़े कहाए।

सत्याधार को शुक्ल का पद मिला और तरीमें बसे ते तरीके शुक्ल कहाए, सत्याधार के पुत्र मधुकर बिगहपुर में बसे और प्रतापी भए [मधुकर के पुत्र १०] चन्दन१ यदुनंदन२ मणिकंठ ३ कुन्जू ४ बशी ५ दुर्गादास ६ धर्मदत्त ७ महासुख ८ मिश्री ९ इन्द्रदत्त १० इन दसो पुत्रों ने दस ग्रामों में अलग२ निवास करके अपनी सन्तान को बढ़ाया। जैसे चन्दन तरी के, यदुनन्दन नवायें के मणिकण्ठ पुरवाके कुन्जू गहरौली के बंशी खरौली के, दुर्गादास भैंसईके, धर्मदत्त विगहपुरके महासुख गूदरपुरके, मिश्री चन्दनपुर के, इन्द्रदत्त ऊंचे गांव के शुक्ल कहाए, [चन्दन के पुत्र ३] रुद्री१ पुरुषोत्तम२ सन्तू ३, ये तीनों तरी के शुक्ल कहाए यदुनन्दन की पहली स्त्रीसे पुत्र १, सत्यशील सो सत्यके शुक्ल कहाए। यदुनन्दन की दूसरी स्त्री से पुत्र १

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सबसुख पाटन के शुक्ल (सबसुख के पुत्र ३) नाल १ घाटम२ अजय३ ये तीनों दलीपपुर के शुक्ल (नालके पुत्र ७) देवमणि१ आदित२ तितई३ बचनू४ देउता५ ठकुरी६ पउपगा७ ये सातो दलीपपुर के शुक्ल कहलाये (घाटम के पुत्र१) भागीरथ, सो भागीरथ साढ़के त्रिवेदी कहाए (भागीरथ के पुत्र५) चिंता१ हीरा २ दयाल३ माधव४ रेवत५ चिंता दयाल साढ़ के त्रिवेदी हीरा घाटमपुरके त्रिवेदी माधौ हाजीपुर के त्रिवेदी रेवत बिहारपुर के त्रिवेदी (अजय के पुत्र २) अम्बर १ कान्ह २, अम्बर घाटमपुर के शुक्ल (अम्बर के पुत्र २) रूपा १ जगदीश्वर २, ये भी दोनों घाटमपुर के शुक्ल, कान्ह ने तीन वेद संग्रह पढ़ा, सो त्रिवेदी कहाये, बिरसा ग्राम में बसे तिनकी स्त्री दो जेठी १ लहुरी २, (जेठी स्त्री के पुत्र २) बासदेव१ भोला २ ये दोनों साठियायेमें बसे जेठीके त्रिवेदी कहाये (लहुरी के पुत्र ६) खुमान१ पदमधर२ मणिकण्ठ ३ धनाकर४ हरी ५ प्रभाकर६ खुमान, मणिकण्ठ बिरसा ग्राममें बसे लहुरीके त्रिवेदी कहाए पदमधर तौबकपुरमें बसे और लहुरीके त्रिवेदी कहाए, धनाकर नवायेके शुक्ल हरी प्रभाकर ये असनी के शुक्ल कहाए (पदमधर के पुत्र ३) कल्लू१ सन्नू२ बेनी ३, ये तीनों तौबकपु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कि9/384

में लहुरी के त्रिवेदी कहाए (महासुखके पुत्र३) आशा दत्त१ पदमना२ रामचन्द्र३ ये तीनों गूदरपुरके शुक्ल (मिश्री के पुत्र २) शिवमणि १ कुमनई २, शिवमणि चौसा के, कुमनई चन्दनपुर के कहाए, (शिवमणि के पुत्र३) दिनकर१ मंहगू२ पटोरे३, ये तीनों चौसा के शुक्ल कहाए (कुमनई के पुत्र२) सूर्यमणि१ गोपीनाथ २, ये दोनों गौड़हा के शुक्ल, सूर्यमणि की पहली स्त्री से पुत्र १ बृन्दाबन ते गौड़हा के शुक्ल (दूसरी स्त्री से पुत्र ३) जगदेव१ रामनाथ २ नारायण ३ जगदेव महोली के, रामनाथ सिकठिया के नारायण गलाथे के शुक्ल कहाए (नारायण के पुत्र १) बाबू, गलाथे के शुक्ल (बाबू के पुत्र ३) छंगे १ केशी २ पसई ३, छंगे पसई गलाथे के शुक्ल, केशी टेढ़ा के शुक्ल, (छंगे के पुत्र ७) देवशर्म १ दुलंमी २ मकरन्द ३ यदुनाथ ४ पीताम्बर ५ कमलापति ६ लोकनाथ ७, ये सब शुक्ल छंगे के गलाथे वाले (गोपी के पुत्र ५) होल १ हरिदास २ नगई ३ कश्यप ४ भानु ५, ये सब विहगपुर के शुक्ल [होल के पुत्र २] उदयनाथ १ भैरव २, उदयनाथ का दूसरा नाम रुद्री सो रुद्री, भैरव शुक्ल विहगपुर के [भैरव के पुत्र ३] लालमणि १ तिलक २ बनवारी ३, ये तीनों उद्धनपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

में बसे और अपने२ नाम से शुक्ल कहाए [लालमणि के पुत्र२] बाला १ बागीश २, बाला हफीजाबाद के बागीश कन्नौज के शुक्ल [बाला के पुत्र५] बीरेश्वर १ नन्दराम २ रामनिवाज३ हरिसेवक४ जगन्नाथ ५ ये सब हफीजाबादी बाला के शुक्ल कहाए [बीरेश्वर के पुत्र ५] काशीराम१ यदुवीर२ रघुवीर ३ गयादत्त ४ गदाधर ५ [काशीराम के पुत्र ३] यमुनादीन १ बोदीन२ गंगादीन३ ये सब बाला के शुक्ल हफीजा-बादी कहाए [नन्दराम की पहली स्त्री से पुत्र ३] विश्वनाथ १ गौरीनाथ २ अमरनाथ ३, [दूसरी स्त्री से पुत्र२] हरिशंकर१ चकरपाणि २ [चकरपाणि के पुत्र २] रामचरण १ शिवचरण २, ये सब बाला के शुक्ल शकूराबादी कहाए, बाला के छोटे भाई बागीस ने नदिया शांतीपुर में न्यायशास्त्र पढ़ा और अति गुणवान प्रतापी भए इस कारण वहां के राजा ने बागीश जी को भट्टाचार्य की पदवी दी और न्याय बागीश शुक्ल कहलाए [बागीशजी के पुत्र ३] चन्द्र-मौलि १ जैकृष्ण २ कुमार ३, चन्द्रमौलि कन्नौज के भट्टाचार्य शुक्ल न्यायबागीश के जयकृष्ण व कुमार जगपुरके शुक्ल भट्टाचार्य न्याय बागीश के, [हरिदास के पुत्र२] चन्द्रमणि१ माणिक २, चन्द्रमणि की पहली

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्री से पुत्र२] बलिराम१ मधुसूदन २ ये सब वि
पुर के शुक्ल कहाए, (बलिराम के पुत्र ४) मनसु
राम १ अनंतराम२ हरिशंकर३ दुर्गादास दूजे४, ये स
भैंसई के शुक्ल कहाए, (चंद्रमणि की दूसरी स्त्री स
पुत्र २) अनिरुद्ध १ भीमसेन२, ये दोनों भैंसईके शुक्ल
(अनिरुद्ध के पुत्र २) जगन्नाथ १ रघुनाथ २ ये दोनो
गलाथे के शुक्ल (रघुनाथ के पुत्र १) मणिकण्ठ सो
एकड़ला के शुक्ल, [जगन्नाथ के पुत्र२] हरी१ पैकू२
ये दोनों अपने २ नाम से विहगपुरी शुक्ल कहलाए।
(पैकू के पुत्र४) बेनीराम१ लक्ष्मीराम२ चतुर्भुज ३
विश्वनाथ४, बेनीराम, लक्ष्मीराम, चतुर्भुज, ये तीनों
विहंगपुरी पैकू के शुक्ल, विश्वनाथ निवई पैकू के
शक्ल (विश्वनाथ के पुत्र२) गुलाल १ देवीदत्त २ ये
दोनों बदर्का के शुक्ल, (भीमसेन के पुत्र २) उमा १
धन्नी२ उमा अपने नाम से शुक्ल विहगपुरी, धन्नी
औनहां में बसे और धन्नी के शुक्ल कहाए (धन्नी के
त्र५, काशीराम१ गोपी२ विश्वेश्वर ३ रामेश्वर४
त्यधर ५ (गोपी के पुत्र १) गोकुल ये सब धन्नी
शुक्ल औनहां के कहाए (मणिक के पुत्र४, आदि
राम १ कल्याणमणि २ हरिहर३ देवमणि४ ये सब
न के शुक्ल (हरिहर क पुत्र ३) किसनी १

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घनश्याम२ पुरुषोत्तम३ ये तीनों शुक्ल विहगपुरी हरि हर के कहाये [किसनी के पुत्र२] कल्याण१ ललऊ २ ये सातनपुर के शुक्ल [घमश्याम के पुत्र१] इन्द्रमणि सो नेवादा के शुक्ल, [पुरुषोत्तम के पुत्र२] मोहन१ रतन २ ये दोनों नेवादा के शुक्ल कहाये [रतन के पुत्र४]सोने१ बसावन २ नित्यानंद ३ नंदू४, ये चारों नेवादा के शुक्ल कहाये, [मोहन के पुत्र३]मुरलीधर १ महामुनि २ रेवतीनाथ ३, मुरलीधर नबीपुर के, महामुनि निबई के, रेवतीनाथ नीलीपुर के तिदरिया शक्ल कहाए [नगई के पुत्र १] संकटे, सो शुकल नगई विगहपुरी [कश्यप की पहली स्त्री से पुत्र १] ख्यूराज सो शुक्ल विगहपुरी ख्यूराज [दूसरी स्त्री से पुत्र ३] भवदत्त१ भास्कर २ मकरन्द ३, यें तीनों अपने २ नाम से बिगहपुरी शुक्ल कहाए, [भवदत्त के पुत्र ५] चन्दाकर १ दिवाकर २ बिष्णुदत्त ३ नारायण ४ ये शुक्ल विहगपुरी भवदत्त के कहाए । पांचवें जगन्नाथ दलीपनगर के भवदत्त के शुक्ल कहलाये [दिवाकर के पुत्र ५] कमल १ कल्याण २ निलीकृष्ण४ गोविन्द ५ ये पांचो भवदत्त के शुक्ल दिवाकर वाले कहाये [भास्कर के पुत्र२] घनश्याम१ लालमणि २, ये दोनों विगहपुरी भास्कर के शुक्ल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहाए [मकरंद के पुत्र५] भास्कर१ मोहन२ धनराज३ देष्कर ४ घनश्याम ५, ये पाँचो विहगपुरी मकरदके शुक्ल कहाए[मुरलीधरकेंपुत्र७]दशरथ१ असई सुख मन ३ भोजराज४ गंगाचरण५ बिरजू६ सकठादीन ७ दशरथ, असई बदरका में अपने नाम के शुक्ल, भोजराज बसई के सुखमन विगौली के, गंगा चरण बरवाई के, बिरजू बरौला के, संकठादीन बरसुई के शुक्ल कहाए, [भोजराज के पुत्र ३) शक्तिधर १ सन्तू २ भगवान ३, शक्तिधर भल्लईके सन्तू पतिड़ा के, भगवान अभयपुर के शुकल कहाए । इति ।

भरद्वाज गोत्र पांडेय का असामी स्थान विश्वा लिख्यते

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
गुणकर	बसथी	७	लाला	गौरा	९
जगदेव	,	६	रामनाथ	पटियारी	१०
स्थान के नाम से अमरो		५	भोजराज	कम्पिला	१०
,	गौरा	९	भानू	बेला	१०
,	पटियारी	१०	कुण्ठवन	पटियारी	१०
,	कम्पिला	१०	कृष्णदीन	पासी	८
,	भीष्मपुर	५	सुक्ख	डोड़ियाखड़ा	१०
,	बेला	५	पूरन	लखनऊ	१८
,	कन्नौज	५	भैरव	असनी[खोरगली	१९
,	पाली	८	बीरेश्वर	गेगासों	२०
,	पहितिया	४	श्रीकृष्ण	,	२०
भास्कर	बंसथी	५	शीतल	,	२०
बछऊ	भीषमपुर	५	गिरधर	शिवपुर, गेगासो	२०
कुलीन	,	५	परम	गेगासों	१९

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
हरिनाथ	गेगासों	२०	मनीराम	तूतीपार खोरि	२०
मणिराम	तूतीपार (गेगासो)	२०	लाला	अमरा	१०
गंगाराम	, ,	२०	राम	,	१०
उद्धहरणनाथ	सोनहा ,	१७	बीरे	,	१५
रामेश्वर	लखनऊ भट्टाचार्य	१८	जीवन	,	१४
गोपीकांत	, ,	१९	लालू	बिलासपुर	१४
बन्शीधर	कन्नौज ,	२०	बीरभद्र	अमरा	१०
मुरलीधर	, ,	२०	बिहारी	मौरा	५
मतिकृष्ण	,	२०	दलपति	नारायणपुर	७
शिरोमणि	,	१९	यशपति	नौगांव	५
चन्द्रमौलि	,	२०	दिबौल	बिहगपुर	५
कमलापति	,	२०	नित्यानन्द	इटौजा	७
श्रीपति	,	२०	छेदी	बागोशपुर	१०
प्रांणनाथ	गेगासों	२०	मथन	बनगांव	१०
परमकृष्ण	,	२०	गंगा	चम्पापुर	४
जगदीश	अमरा	१५	खंजन	मनोह	४
भूरे	गेगासों	२०	ज्वालानाथ	नाथपुर	३
भास्कर	,	२०	बद्रीनाथ	हरिदासपुर	२
लोटे	असनी (खोरि)	२०	जयदेव	सवाइजपुर	७
बाले	,	२०	मोती	लखीमपुर	५
गंगू	,	२०	मंशा	विरसोपुर	८
कान्हर	,	२०	चेतन	कितूरिया	४
गदाधर	,	२०	बचनू	बररी	४
लाले	कन्नौज खोरि	२०	केशरी	जहानाबाद	५
नरोत्तम	असनी खोरि	२०	शिवा	बगरा	४
डोडर	कन्नौज खोरि डोंडरिहा	१९	भजेले	पहितिया	४
कन्धर	,	२०	बिहारी	चेला दूजा	५
विश्वनाथ	गेगासों	२०	कोमल	मुसौरा	२
			गिरधर	मौरांव	१०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भरद्वाज गोत्र शक्लों का असामी स्थान बिश्वा लिख्यते

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
सत्याधर	तरी	४	पउपगा	दिलीपपुर	११
बासुदेव	,	४	अम्बर	घाटमपुर	२
मधुकर	बिराहपुर	१०	रूपा	,	२
चन्दन	तरी	६	जगदीश्वर	,	२
यदुनन्दन	नवार्ये	५	धनाकर	नवार्ये	१३
मणिकण्ठ	पुरवा	२	हरी	असनी	१८
कुन्जू	गहरौली	४	प्रभाकर	,	२०
बंशी	खौली	३	आशादत्त	गूदरपुर	५
दुर्गादास	भैंसई	५	पद्मनाभ	,	५
धर्मदास	बिहगपुर	११	रामचन्द्र	,	५
महासुख	गूदरपुर	६	शिवमणि	चौसा	८
मिश्री	चन्दनपुर	३	कुमनई	चन्दनपुर	९
इन्द्रदत्त	ऊंचेगांव	३	सूर्यमणि	गौड़हा	१०
रुद्री	तरी	६	गोपीनाथ	,	१०
पुरुषोत्तम	,	५	बृन्दाबन	,	१०
सन्तू	,	५	जगदेव	महौली	१०
सत्यमोख	सत्य	४	रामनाथ	सिकटिया	१०
सबसुख	पाटन	१०	नारायण	गलाथे	१६
नाल	दिलीपपुर	१२	बाबू	,	१७
घाटम	,	१२	छगे	,	२०
अजय	,	१०	केशो	टेढ़ा	१९
देवमणि	,	१२	पसई	गलाथे	१४
आदित्य	,	११	देवशर्म	गलाथे, छंगे	१४
तितई	,	१२	दुलम्भी	,	१९
बतनू	,	११	मकरन्द	,	१८
बिउता	,	१२	यदुनाथ	,	१८
ठकुरी	,	११	पीताम्बर	,	१८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
कमलापति	गलाथे [छंगे]	१९	गौरीनाथ	शकूराबाद, बाला	१७
लोकनाथ	,	१९	अमरनाथ	,	१८
होल	बिगहपुर	११	हरीशंकर	,	१८
हरिदास	,	१२	चक्रपाणि	,	१८
मगई	,	१०	रामशरण	,	१९
कश्यप	,	१३	शिवचरण	,	१८
भानु	,	१०	चन्द्रमौलि	कन्नौज भ०न्याय	१५
उदयनाथ रुद्री	बिगहपुर	१२	जयकृष्ण	जगपुर	१५
भैरव	,	१२	कुमार	जगपुर भ० न्याय	१५
लालमणि	उदनपुर	१३	चन्द्रमणि	बिगहपुर	८
तिलक	,	१३	माणिक	,	१०
बनवारी	,	१३	बलिराम	,	५
बाला	हफीजाबाद	२०	मधुसूदन	,	८
बागीश	कन्नौज	१८	मनसुख	भैंसई	१०
बीरेश्वर	हफीजाबाद बाला	२०	अनन्तराम	,	९
नन्दराम	,	२०	हरिशकर	,	८
रामनिवासी	हफीजाबाद	२०	दुर्गादास	भैंसई अपने नाम	१५
हरिसेवक	,	१९	अनिरुद्ध	भैंसई	१०
जगन्नाथ	,	१९	भीमसेन	,	१०
काशीराम	,	२०	जगन्नाथ	गलाथे	१०
यदुबीर	,	२०	रघुनाथ	,	१३
रघुबीर	,	२०	मणिकण्ठ	एकड़ला	११
गयादत्त	,	२०	हरि	बिगहपुर	१६
गदाधर	,	२०	पैंक	,	१८
यमुनादीन	,	२०	लक्ष्मीराम	बिगहपुर, पैंकू	१८
देवीदीन	,	२०	बेनीराम	,	१८
गंगादीन	,	२०	चतुरभुज	,	१८
बिश्वनाथ	शकूराबादी, बाला	१७	बिश्वनाथ	मिचई, पैंकू	१८

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
गुलाल	बबर्का [पैकू]	१७	महामुनि	निवई	१०
देवीदत्त	'	१०	रेवतीनाथ	नौबीपुर तिद०	१०
उमा	बिगहपुर 'अपने नाम'	८	सकटे	बिगहपुर [नदई]	१२
धन्नी	औनहां	१५	ख्योराज	' ख्योरहा	१०
काशीनाथ	औनहां धन्नी	१५	भवदत्त	बिगहपुर अपनेनाम	१५
गोपी	'	१५	भास्कर	' '	१२
बिश्वेश्वर	'	१४	मकरन्द	' '	१२
रामेश्वर	'	१४	चन्द्रकर	बिगहपुर मौदत्त	२०
सत्यधर	'	१४	दिवाकर	'	१८
गोकुल	औनहां, धन्नी	१६	बिष्णुदत्त	' '	१७
आदित्यराम	पाटन	८	नारायण	' '	१५
कल्याणमणि	'	१२	जगन्नाथ	दलीपदत्त मौ०	१६
परिहर	'	१२	कमल	मौदत्त दिवाकर	१६
देवमणि	'	१२	कल्याण	' '	१६
किशनी	बिगहपुर हरिहर	१६	निली	' '	१७
घनश्याम	' '	१७	कृष्ण	' '	१७
पुरुषोत्तम	' '	१७	गोविन्द	' '	१६
कल्याण	सातनपुर	१२	घनश्याम	बिगहपुर भास्कर	१०
ललऊ	'	१४	लालमणि	' '	१०
इन्द्रमणि	नेवादा [हरिहर]	१३	भास्कर	बिहगपुर मकरंद	१०
मोहन	' '	१३	मोहन	' '	१०
रतन	' '	१३	धनराज	' '	१०
सोते	नेवादा	१२	देवशंकर	' '	१०
बसावन	'	१२	घनश्याम	' '	१०
नित्यानन्द	'	१२	दिनकर	चौसा	७
नन्दू	'	१२	महंगू	'	७
मुरलीधर	नौबीपुर	१२	पटोरे	'	७
दशरथ	अपने नाम	५	असई	अपने नाम	४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिस्वा	असामी	स्थान	बिस्वा
सुखमन	बिगहुली	३	संकठादीन	बरसुई	३
मोजराज	बसई	३	सन्तू	मलई	३
गंगाचरन	बरबाई	३	शक्तिधर	फतिहा	३
बिजल	बरौला	३	भगवान	अभयपुर	५

॥ भरद्वाज गोत्र त्रिवेदी ॥

भागीरथ	साढ़	१०	भोला	जेठी	१३
चिन्ता	,	१०	खुमान	बिरसा लहुरी	१३
दयाल	,	१०	पदमधर	तौधकपुर लहुरी	१२
हीरा	घाटमपुर	१०	मणिकण्ठ	लहुरी	१४
माधौ	हाजीपुर	१०	कल्लू	तौधकपुर लहुरी	१२
रेवत	बिहारपुर	१०	बन्नू	,	१२
कान्ह	विरसा	११	बेनी	,	१२
बिरसा	जेठी	१२	इति भरद्वाज गोत्र समाप्त		

॥ इति षट् गोत्रः ॥

। गर्ग गोत्रस्य व्याख्यानम् ।

श्री गर्गाचार्य जी जिनकी निर्माण की हुई गर्ग सहिता, गर्गजातक, गर्गपटल, गर्गमनोरमा, गर्ग-पुराण आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं । यह लघुबंशियों के पुरोहित थे, तिन गर्ग मुनि जी को चौदहवीं पीढ़ी में एक महानन्द चौबे अति प्रतापी भए, तिनके पुत्र महेश्वर डौंडियाखेर के चौबे प्रसिद्ध भए । (महेश्वर के पुत्र ३) श्यामलाल १ सुन्दर २ छबि नाथ ३, श्यामलाल पिहानी के सुन्दर अंगरीपुर के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के छविनाथ जिनछीपुर के चौबे (श्यामलाल के पुत्र ४) श्रीधर१ मनोह२ बिच्चू३ गोपाल४, श्रीधरप्रचोर के पांडे, मनोहर पिहानी के, बिच्चू कन्नौज के पाँडे गोपाल पड़री के पाँडे (गोपाल के पुत्र ३) गुमानी १ ठकुरी२ चतुरी ३, गुमानी शिवराजपुरके अवस्थी ठकुरी संवरि के अग्निहोत्री, चतुरी देवकली के उपाध्याय कहाए, गुमानी अवस्थी के पुत्र २, रजनी १ किंदर २, रजनी उन्नाव के दुबे किंदर गगयां ग्राम के चौबे, सुन्दर के पुत्र २ भाऊनाथ १ रगनाथ २ भाऊनाथ१ रगनाथ २ भाऊनाथ सदनियां के मिश्र रंगनाथ पटनाके मिश्र, (रंगनाथ के पुत्र ३)सहतावन१ गुदरीपुर के पाठक, श्रद्धा त्रिपुरारितपुर के पाठक, सतोषके पुत्र २ गिरधर१ गोपाल२, गिरधर आमतारा के पाठक, गोपाल सांपीके तिबारी, गिरधर के पुत्र१ भार्गव सो छीतूपुरिया पाठक कहाए ।इति।

॥ गर्ग गोत्र चौबे ॥ । ॥ गर्ग गोत्र पाठक ॥

असामी	स्थान	बिस्वा	असामी	स्थान	विस्वा
महेश्वर	डौंडियाखेरे	३ ।	सहतावन	गुदरीपुर	२
श्यामलाल	पिहानी	३ ।	श्रद्धा	त्रिपुरारिपुर	२
सुन्दर	अंगुरपुर	३ ।	सन्तोष	सिरौना	२
छबिनाथ	जिनछीपुर	३ ।	गिरिधर	आमतारा	२
किन्दर	गगंया	५ ।	भार्गव	छीतूपुर	५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
श्रीधर	पचकोर के पांडे	२	ठकुरी	सवरि के अग्निहोत्री	२
मनोहर	पिहानी के पांडे	४	चतुरी	देवकली के उपाध्याय	१
बिच्चू	कन्नौज के पांडे	६	रजनी	उन्नाव के दुबे	१
गोपाल	पड़री के पांडे	२	सदनियां	के दुबे	२
माऊनाथ	सदनियां के मिश्र	२	खेउलहा	के दुबे	२
रंगनाथ	पटना के मिश्र	८	गोपाल	सांपी के तिवारी	२
गुमानी	शिवराजपुरके अवस्थी	२		इति गर्ग गोत्र समाप्त	

गौतम गोत्रस्य व्याख्यानम्

ब्रम्हा के पुत्र न्याय शास्त्र के कर्ता श्री गौतम महामुनि जी के बंश में गौतमो गगा के निकट धनावली ग्राम में माधवनन्द नाम शुक्ल न्याय शास्त्र के वेता अतिगुणी उत्पन्न भए, उनके पाँचवी पीढ़ी में त्रिपुमर्दन नाम शुक्ल सो धनावली के शुक्लकहाए (त्रिपुमर्दन के पुत्र१) खेमकरण सो अपने पिता के बसाए त्रिपुरारिपुर में जाय बसे सो त्रिपुरारिपुर के शुक्ल, (खेमकरण के पुत्र ३) धनई १ बिजई-२ अगद ३, धनई गहवर के, विजई बांनीपुर के, अंगद बसनिहा के तिवारी, [धनई के पुत्र २]यदु-बंश १ हरिबंश २, यदुबंश कन्चलपुर के अग्नि-होत्री, [बिजई के पुत्र २] भगवन्त १ भगवान-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के दुबे, (अंगद की पहली स्त्री से पुत्र २) शिवलाल १ रूपराम २, शिवलाल गुलौलीके, रूपराम चिलौली के पांडे, (रूपराम के पुत्र २) कालेश्वर १ नागेश्वर २, कालेश्वर के नौदशी के पांडे, नागेश्वर हरिहरपुर के पांडे, (कालेश्वर के पुत्र ३) मधई १ भजनी २ सीवन्त ३, मधई त्रिपुरारिपुर के अवस्थी, भजनी जुन्गरपुर के अवस्थी, सीवंत नवलपुर के अवस्थी कहाए, (अंगद की दूसरी स्त्री से पुत्र १) कण्ठमणि सो पौखरा के मिश्र कहाए । (कण्ठमणि के पुत्र २) महासुख १ परमसुख २, महासुख पौखरा के गौतमी मिश्र कहाए, परमसुख जुन्गरपुर के मिश्र कहाए ॥ इति ।

॥ गौतम गोत्र वर्णन ॥

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
त्रिपुर मर्दन	धनावली के	शुक्ल ३	रूपराम	चिलौली के	पांडे ३
क्षेमकरण	त्रियुरारिपुर के	शुक्ल २	कालेश्वर	नौवेशी के	पांडे, २
धमई	गहवर के	तिवारी २	नागेश्वर	हरिहरपुर के	पांडे ३
बिजई	कोदीपुर के	तिवारी २	मधई	त्रिपुर के	अवस्थी ४
अंगद	बसनिहा के	तिवारी २	भजनी	जुगपुर के	तिवारी १
यदुबंश	कचलपुर के	अग्निहोत्री २	सीवन्त	नवलपुर के	अवस्थी १
भगवानदीन	गुलौली के	दुबे १	यज्ञ के		अवस्थी ३
हरिबंश	शुक्लापुर के	अग्निहोत्री २	कंठमणि	पौखरा के	मिश्र २
भगवन्त	महेरी के	दुबे १	महासुख	गौतमी के	मिश्र २
मतिकर के		दुबे २	परमसुख	जूंगरपुर के	मिश्र २
शिवलाल	गुलौली के	पांडे २		इति गौतम गोत्र समाप्त	

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भारद्वाज गोत्रस्य व्याख्यानम्

श्री महर्षि भारद्वाज जी जिनकी भारद्वाज सहिता में बांणविद्या हैं जो आज कल लुप्त प्राय हो गयी है तिन भारद्वाज जी के शिष्य तपोधन नाम ब्रम्हचारी ने अपने गुरू भारद्वाज जी की आज्ञा से चित्रकूट के राजा महिपाल अग्निबंशी की सौभाग्यवती नाम्नी कन्या से विवाह कर अंगेठा नाम ग्राम में निवास किया फिर वहां अनेक ब्राम्हणों को बुलाय अग्निहोत्र करके ब्राम्हणों को दान दक्षिणा से संतुष्ट किया। तब ब्राम्हणों ने तपोधन जी को अग्निहोत्री कहा और भारद्वाज गोत्र का प्रमाण दिया तिन तपोधन अग्निहोत्री की सातवीं पीढ़ी में एक धीरधर नामक प्रतापी उत्पन्न भए, सो धीरधर अगठा के अग्निहोत्री कहाए। (धीरधर के पुत्र५) बाल मुकुन्द १ देवकी नन्दन २ अघमोचन ३ मद मोचन ४ बिहारी ५, बाल मुकुन्द ऐधीपुर के तिवारी, देवकी नन्दन तिवारीपुर के तिबारी, अघ मोचन चौंसा के दुबे, मदमोचन मिहौनी के दुबे, बिहारी ख्यूलहा के दुबे, (बाल मुकुन्द के पुत्र पुत्र ३) हीरा १ किशुन २ शंकर ३, हीरा राधनि के शुक्ल, किशुन गांडूमऊ के दीक्षित,

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीक्षित, शकर पहितिया पांडे, [हीरा शुक्ल के पुत्र-१] शुभंकर सो राधनि के शुक्ल, [शुभशंकर के पुत्र २] श्रीपति १ पिनाकी २, श्रीपति त्रिपुरा के शुक्ल, पिनाकी शांतिपुर के शुक्ल, (पिनाकी के पुत्र १) भे सो कालिकापुर के शुक्ल, (किशुन-दीक्षित के पुत्र ६) ब्रजलाल १ बुलाकी २ बनवारी ३ केदार ४ महानन्द ५ निहाल ६, ब्रजलाल मगड़ायल के, बुलाकी ख्यूटहा के, बनवारी जहानाबाद के, केदार डौंडिया खेरे के, महानन्द फलहारी के, निहाल हड़हा के दीक्षित पर ये सब छहौ गांडू-के दीक्षित कहाए। [शकर पांडे के पुत्र ३] गगा-धर १ शशिधर २ शूलधर ३, गंगाधर भुसौरा के, शशिधर सोनहा के, शूलधर अमौरा के, पर ये सब पहितिया के पांडे कहे जाते हैं। [देवकीनंदन के पुत्र १) दुर्गादत्त सो खौरिहा के तिवारी, (अघ-मोचन दुबे क पुत्र १) सो इक्षावर के उपाध्याय कहे गए, (मद मोचन दुबे के पुत्र २) अम्बिकादत्त बरुआ के दुबे, दुलारे इछावर के दुबे (बिहारा दुबे के पुत्र १)सनऊ सो रैगांव के दुबे कहाए ॥ इति।

॥ भरद्वाज गोत्र वर्णन ॥

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
तपोधन	अंगेठा के अग्निहोत्री	४	बालमुकुन्द	ऐधीपुरके तिवारी	४
धीरधर	अंगेठा के अग्निहोत्री	४	देवकीनन्दन	तिवारीपुर के "	५

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिस्वा	असामी	स्थान	विस्वा
दुर्गादत्त खोरिहा के तिवारी		३	बेनडर के तिवारी		२
अघमोचन चौसा के दबे		३	पुरवा के तिवारी		२
मदमोचन पिहानी के दुबे		३	ऐनि के		२
बिहारी ख्यूलहा	,	२	कौशिकी इच्छावरी अवस्थी		३
अम्बिकादत्त बरुआ	,	४	गगा के दीक्षित		१
दुलारे इआवर के	,	२	मोदत्त	,	१०
मनऊ रैगवा	,	२	महंगू पटोरे के मिश्र		१०
होरी रावनि के शुक्ल		५	मदेश्वर के दुबे		१
शुभकर	,	५	उनइयां	,	२
श्रीपति	,	३	पाराशरी साधु के दुबे		२
पिनाकी शांतिपुर के शुक्ल		३	जर्नादन अगेठा के अग्निहोत्री		४
सूरे कालकापुर के	,	२	षं० मलिहाबाद के उपाध्याय		२
किशन गांडूमऊ के दीक्षित		५	सौतिहा नागपुर जहानाबादी		१
ब्रजलाल मगड़ायल के	,	३	नरैनिहा नरोत्तमपुर के अघैय		२
बुलाकी ख्यूटहा	,	३	अर्गलश सगुनापुर के	,	२
बनवारी जहानाबाद	,	५	अर्गलश , पाठक		२
केदार डौड़ियाखेरा	,	७	यज्ञ जहानाबाद	,	३
महानन्द कल्हारी	,	२	योगेश्वरी मगरायर	,	३
निहाल हड़हा	,	२	भानु चौसा के पाठक		५
शंकर पहितिया पांडे	,	३	गलाथे ने	,	२
गंगाधर, सुरौरा	,	२	सोनिहा		२
शशिधर भुनहा	,	३	नागपुर	,	२
शूलधर अमौरा	,	३	ढाकली	,	२
त्रिलोकी इक्षाबर उपाध्याय		२	नरवल	,	२

॥ इति भारद्वाज गोत्र समाप्त ॥

धनंजय गोत्रस्य व्याख्यानम्

द्वापरान्त कृष्णाअवतार के समय द्वारिकापुरी में

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजा उग्रसेन की सभा में एक ब्राम्हण कि जिसके पुत्र उत्पन्न होकर मरजाया करते थे और वह ब्राम्हण मरा हुआ बालक उग्रसेन की सभामें रख जाया करता और अनेक दुर्वाक्या कह जाता था, इस प्रकार आठ बालक मर गए, नवें बालक की रक्षा निमित्त अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी कि हम रक्षा करेंगे निदान अर्जुन से रक्षा न हो सकी तब अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने धनुष समेत अग्नि प्रवेश होने को उद्यत हुए उस समय अर्जुन को साथ लेकर श्री कृष्णचन्द्र श्री विष्णू भगवान के पास जाकर प्राप्त हुए और ब्राम्हण के समस्त पुत्र लाकर ब्राम्हण को दिए। यह कथा श्री-मद्भगवत के दशमस्कन्ध अध्याय ८१ में है। तात्पर्य यह है कि बालक लेकर ब्राम्हण अति प्रसन्न हुआ तब अर्जुन ने कहा कि देवता इनमें से एक बालक हमको दीजिए हम उसका पोषण अपना पूज्य समझेंगे—तब ब्राम्हण ने प्रसन्नता पूर्वक अपना एक बालक अर्जुन को दिया अर्जुन ने लेकर उसका पालन किया और उसका नाम कृष्णानन्द रक्खा, तब श्रीकृष्णचन्द्र जी ने कहा कि हे अर्जुन तुमने इसका नाम हमारे नाम का धरा इस कारण हम इस बालक का गोत्र तुम्हारे नाम का अर्थात धनञ्जय प्रमाण देते हैं, तदुपरांत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रांत श्रीकृष्णचन्द्र और अर्जुन ने उसका यज्ञोपवीत संस्कार गर्गाचार्य जी से करवाया, और अवन्तिका पुरी में साँदीपन ऋषि के पास विद्या पढ़ने को भेज दिया, वहां वह अनेक विद्याओ को पढ़ कर परम विद्वान हुआ, तिन कृष्णानन्द के वंश में अनेक पीढ़ी के उपरान्त १ पुष्करानन्द, पुष्पानन्द २, ये दोनों बडे प्रतापी भए, पुष्करानन्द के वंश नहीं चला, पुष्पानंद नानपारा के तिवारी कहाए, [पुष्पानन्द के पुत्र ४] रामशरण १ शिवशरण २ हरिभजन ३ शिवभजन ४, रामशरण नौगजा के तिवारी, शिवशरण बिहटा के तिवारी, हरिभजन कचौरा के तिवारी, शिवभजन श्रंगपुर के तिवारी, [रामशरण के पुत्र २] सुरेश्वर १ ग्रहपति २, सुरेश्वर मथारिपुर के दीक्षित, ग्रहपति चरखारी के अवस्थी, [शिवकरण के पुत्र२] गिरधारी १ यज्ञपति २, गिरधारी सुन्दरपुर के दुबे यज्ञपति यज्ञपुर के अवस्थी, [हरिधजन के पुत्र १] शिवशकर सो पाली के अवस्थी, [शिवभजन के पुत्र २] कलानिधि १ ध्रुवहयन २ कलानिधि तिलसरा ध्रुवहयन अम्बरसर के अवस्थी ॥ इति ।

॥ धनञ्जय गोत्र वर्णन ॥

असामी स्थान विश्वा । असामी स्थान विश्वा

पुष्पानन्द नागपारा के तिवारी ३ । शिवशरण छटहा के तिवारी ३

रामशरण नौगंजा के तिवारी ३ । हरभजन कचौरा के तिवारी ३

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
शिवभजन	शृंगार के	तिवारी ३	शिवशंकर	पाली के	अवस्थी २
सुरेश्वर	मन्मथारिपुर के	दीक्षित १	कमलानिधि	तिलसरा के	अवस्थी २
यज्ञपति	मज्ञपुर के	अवस्थी २	धरूनयन	अम्बर के	अवस्थी २
ग्रहपति	चरखारी के	अवस्थी २	गिरधारी	सुन्दरपुर के	दुबे १

। इति धनञ्जय गोत्र समाप्त ।

काश्यप गोत्रस्य व्याख्यानम्

पूर्व बशावलियों के अनुसार अनुमान से तीन सौ अस्सी वर्ष व्यतीत हुआ कि यवन लोगों से और मदारपुर अधिपति भइंहार ब्राम्हणों से अति युद्ध हुआ । निदान सब ब्राम्हण परास्त हुए । और सब कट मरे । केवल एक अनन्तराम ब्राम्हण की स्त्री गर्भिणी थी । सो यवनों उपद्रव के भय से स्योना नाम के नाई के साथ उनकी ससुरारि में जाकर के बसी । परन्तु अपने पति देवर पुत्रादिकों के मारे जाने के कारण दुखी रहती थी । और भोजन निरन्तर न कर पाने के कारण दुर्बल और शक्तिहीन हो गई थी । गर्भ के दिन पूर्ण होनेपर उसके पुत्र होने के समय अति कष्ट पूर्वक कठिनता से पुत्र उत्पन्न हुआ । और वह ब्राम्हणी मृत्यु बश हुई । तब स्योना नाई ने उसकी क्रिया ब्राम्हण द्वारा करवा दी । और उस बालक का जातन संस्कार ब्राम्हणों की रीत्यानुसार करवाया । और नाम उस बालक का गर्भू रखा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का हुआ तब कश्यप गात्री चिलौली के तिवारी जो स्योना के नाई के पुरोहित सुखमणि नाम था तिनके सन्तान नहीं थी उनको वह बालक समर्पण किया । तिन सुखमणि तिवारी जी ने उस गभू नाम बालक का यज्ञोपवीत वेद रीति से किया और वेद विद्या का अध्ययन कराया और कश्यप गोत्र कहा, कुतुमऊ ग्राम में उस बालक का निवास था इस कारण कुतुमऊ के तिवारी की पदवी दी, गर्भू के बशमें कटोरी तथा अस्तुरा की पूजा अभी तक शुभ कार्य में होती है यह अस्तुरा का पूजन उस नाई के उपकार को स्मरण कराता है । (गर्भू के पुत्र २) गौरी१ गणेश २, गौरी मदनपुर के तिवारी, गणेश बिहारपुर के तिवारी, (गौरी के पुत्र ४) परमसुख १ मोहन २ कमोरी ३ रमनी ४, ये चारों मदारपुर के तिवारी, (मोहन तिवारी के पुत्र ४) सीताराम १ शांति २ कर्ण ३ जयराम ४, सीताराम कुलूपुर के तिवारी, शांती बड़ौरा के तिवारी, कर्ण तिलौरा के तिवारी, जयराम गलाथे के तिवारी, (जयराम के पुत्र १) सो मिगलोनी के अवस्थी, (कमौर के पुत्र ५) रन्जन १ त्रिभुवन २ ठकुरी ३ लखानो ४, बहादुर ५ रंजन सुगनापुर के दुबे, त्रिभुवन बिहादुरपुर के दुबे, ठकुरी गल्हैया के दुबे, लखनी-

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खुड़हा बिरौनी के दुबे, बहादुर मगरायल के दुबे, (ठकुरी की पहली स्त्री से पुत्र १) जयपाल, सो बिठूर के दुबे कहाए। (ठकुरी की दूसरी स्त्री से पुत्र ३) भग्गा १ जुड़ावन २ शीतल ३, भग्गा अमृतपुर के अग्निहोत्री, जुड़ावन लखनऊ के अग्निहोत्री, शीतल कठेरुआ के अग्निहोत्री, (गणेश के पुत्र ३) जगनू बिनौर के अग्निहोत्री, (जगनू के पुत्रा ३) रामकृष्ण १ परमाई २ गोवर्धन ३, रामकृष्ण कृतानपुर के मिश्र, परमाई भागीपुर के दीक्षित, गोवर्धन बिघौली के शुक्ल, (रामकृष्ण के पुत्रा १) देवकीनंदन सो नगरा के मिश्र कहाए, (परमाई के पुत्रा १) रतने सो क्यूना के दीक्षित, (रतने के पुत्रा ५, गोपी १ गिरधर २ गोपाल ३ गगा ४ देवदत्त ५, गोपी मदनपुर के दीक्षित, गिरधर शिवली के दीक्षित, गोपाल बिहारपुर के दीक्षित, देवदत्त कुतूमऊ के दीक्षित, (गोवर्धन शुक्ल के पुत्र१) सुन्दर सो रिवाड़ो के शुक्ल कहाए ॥ इति ।

। कश्यप गोत्र तिवारियों का आसामी स्थान बिस्वा लिख्यते ।

असामी स्थान	बिस्वा	असामी स्थान	बिस्वा
गर्भू कुतूमऊ के तिवारी	७	परमसुख मदारपुर कुतमउहा	९
गोरी मदारपुर कुतमउहा	१०	मोहन ,, ,,	९
गणेश बिहारपुर ,,	८	कमोरी ,, ,,	९

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
रमनी	मदारपुर कुतमउहा	९	काश्यप गोत्र अग्निहोत्री		
सीताराम	कुलउपर ,,	५	जगनू	बिनौर	५
शांति	बरौरी के ,,	१०	मग्गा	अमृतपुर	४
कर्ण	बिलोरी ,,	१	जुड़ावन	लखनऊ	४
जयराम	गलाथे ,,	७	शीतल	कठरुआ	४
तिवारीपुर के तिवारी ,,		२	खिरी	कलुहा	१०

कश्यप गोत्र दीक्षित			कश्यप गोत्र दुबे		
परमई	भागीपुर के	३	रंजन	सगुनापुर	४
रतने	क्यूरा	१०	त्रिभुवन	बिनहारपुर	२
गोपी	मदारपुर ,,	५	ठकुरी	कलहथा	४
गिरधर	शिवली ,,	४	लखनी	खड़हा बिनवारी	२
गोपाल	बिहारपुर ,,	२	बहादुर	मगरायल	७
गंगा	बांणपुर ,,	१०	जयपाल	बिठूर	४
देवदत्त	कुतुमऊ ,,	६	सीरू	संदनियां	२
ालई	,, ,,	४	ठाठबिलार		२
्पई	,, ,,	४	लहुरी		२
खेने	शिहुड़ा	१	इच्छावरी		२
चन्द	बिहारपुर	२	बिहार		२
	शाहाबाद	२	रामकृष्ण कृपाल के मित्र		३
	कड़री	२	देवकीनन्दन नागरा		३
	गरहा	२	साहब मिगलान के अव०		३
गोबर्द्धन	बिघोला के शुक्ल	५	आशावत्ती क्यूराके अव०		२
सुन्दर	रिवाड़ो ,,	४	यज्ञ	खरमुआ ,,	४
			हरी	बबुआ ,,	१०

इति काश्यप गोत्र समाप्त

। वत्सगोत्रस्य व्याख्यानम् ।

श्रीब्रम्हा के बंश में वत्समुनि तेजस्वी होते भये, तिनके बंश में अतिकाल के उपरान्त एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माधवनन्द नाम अति प्रतापी हुए कि जिन्होने विद्या के बल से बड़े बड़े राजाओं को बश में किया था और माधवा नन्द जी सर्वत्र परि-भ्रमण करते हुए पश्वात द्योकली में आके निवास किया। सो द्योकली के तिवारी कहाये (माधवा-नन्द के पुत्र) मदन गोपाल १ गोबर्धन २ मदन गोपाल सांपे के तिवारी, गोवर्धन अर्गल पुर के दुबे कहाए, [मदन गोपाल के पुत्र ४]कसनी १ रोहन २ झुन्नी ३ गयादत्त ४, कसनी मन्धना के तिवारी, रोहन रौतापुर के तिवारी, झुन्नी रायपुर के तिवारी, गयादत्त मदनपुर के तिवारी, (कशनी के पुत्र ३) जीवन १ बद्री २ मौजीराम ३ जीवन बत्सपुर के मिश्र, बद्री हिंगेल के मिश्र, मौजीराम ओकापुर के पांडे, [मौजीराम के पुत्र ४] मुन्ना १ खूबी २ गिरधर ३ गुपाली ४, मुन्ना जानावली के पाँडे, खूबी सेढ़पुर के पाठक, भदरसी के पांडे, गुपाली मसवान पुर के पांडे, (रोहन तिवारी के पुत्र २) रूपई १ शोभाराम २ रूपई हथभरिया के दीक्षित, शोभराम सिमौनी के शुक्ल, [झुन्नी तिवारी के पुत्र ३] गणेश दत्त १ शिवा नन्द २ सूर्यप्रसाद ३ गणेश दत्त पटना के दुबे, शिवानन्द द्योकली के दुबे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूर्य प्रसाद रायपुर के दुबे, (गणेशदत्त के पुत्र १) चिंतामणि सो द्योकली के अग्निहोत्री, 'गयादत्त के पुत्र २) रामदयाल १ गौतम २, रामदयाल हिरौला के शुक्ल, गौतम जलालपुर के पाठक ॥ इति ।

॥ वत्स गोत्र तिवारी ॥

असामी	स्थान	बिश्वा	।	असामी	स्थान	बिश्वा
माधवनन्द	द्योकली	२	।	मोहन	रीतापुर	२
मदनगोपाल	सांपे	३	।	झुन्नो	रायपुर के तिवारी	२
कसनी	मन्धना	८	।	गयादत्त	मकनपुर	२

॥ वत्स गोत्र पांडे ॥

मौजीराम	आकापुर	५	।	जीवन	वत्सपुर के मिश्र	५
मुन्ना	जानावली	३	।	बद्री	हिंगोल '	२
गिरधर	भदरसी	४	।	गणेशदत्त	पटना के दुबे	५
गुपाली	मसवानपुर	४	।	शिवानन्द	द्योकली '	२
नगऊ	पड़री नेवन्ना	४	।	गोवर्द्धन	अर्गलपुर '	२
नौगांव के पांडे		४	।	सूर्यप्रसाद	रायपुर '	१
राउत	'	४	।	व्यौतरिया के	'	५
हरिदयालपुर के पांड़े		४	।	सिनौमौ	के दुबे	१
द्योकली	'	४	।	ख्यूलहा के	दुबे	५
हरिकुल	'	४	।			

॥ वत्स गोत्र शुक्ल ॥

शोभाराम सिभौंनी के	४	।	रुपई हथमरिया के दीक्षित	१
राम दयाल हिरौंली	४	।	द्योकली उपाध्याय	२
खूबी सेढ़रपुर के पाठक	४	।	मन्धना के पाठक	७
गौतम जयपुर '	३	।	मियाँगंज '	५
चिंतामणि द्योकलीके अग्निहोती	३	।	मौरहा फफूंद के राउत	१

। वत्स गोत्र समाप्त ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वशिष्ठ गोत्रस्य व्याख्यानम्

श्री ब्रम्हा के पुत्र श्री वशिष्ठ मुनि जो रघुबशियों के गुरू व पुरोहित कहाते हैं उनके वश में अतिकाल के पश्चात महानन्द नाम पण्डित अति प्रतापी हुए व मौरायें ग्राम में निवास किया सो एकाबशिष्टी चौबे मौराय के कहाए । [महानन्द के पुत्र १] महिमान सो मोतीपुर के चौबे, [महिमान के पुत्र २] काशीराम १ प्रयागदत्त २, काशीराम गोधनी के चौबे, प्रयागदत्त मितपुर के चौबे, [काशीराम के पुत्र २] राघव १ भागीरथ २, राघव जलारी के दुबे, भागीरथ लहरापुर के दुबे, [राघव के पुत्र २] भवानी १ महाबीर २, भवानी बगरिया के दीक्षित, महाबीर ब्रम्हशिला के दीक्षित, [भवानी के पुत्र २] मोहन १ सोहन २, मोहन सगुनीपुरी दुबे, सोहन रामपुर के अवस्थी, [प्रयागदत्त के पुत्र ३] आनन्द १ नन्दराम २ नारायण ३ आनन्द हन्नूपुर के तिवारी, नन्दराम ख्यूरा के पाठक, नारायण ख्यूरा के एकाबाष्ठी चौबे, [आनन्द के पुत्र१] बन्शी सो सगुनापुर के तिवारी, नारायण के पुत्र २ , जमदग्नि १ नथमल २, जमदग्नि डौडियाखेरा के चौबे, नथमल आंटी के चौबे ।। इति ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी स्थान	बिश्वा	असामी स्थान	बिश्वा
महानन्द मौरायें के चौबे	३	काशीराम गोधनी के चौबे	३
महिमान मोतीपुर	३	प्रयागदत्त मितपुर '	३
नारायण ख्यूरा के एका	२	मोहन सगुनापुर के दुबे	२
वशिष्टी चौबे		भवानी बागरिया के दीक्षित	१
जमदाग्नि डोड़ियाखेरे के चौबे	३	महावीर ब्रम्हशिला '	२
नथमल आटीपुर '	२	सोहन रामपर के अवस्थी	२
कन्नौज '	३	आनन्द हन्नूपुर के तिवारी	२
राघव जलारी के दुबे	२	बन्शी सगुनापुर '	२
भागीरथ लहीरपुर '	२	नन्दराम ख्यूरा के पाठक	१

। इति वशिष्ठ गोत्र समाप्त ।

कौशिक गोत्रस्य व्याख्यानम्

श्रीमान राजा गाधि के पुत्र विश्वामित्र जी को जो अपने तपोबल करके राजर्षि से ब्रम्हर्षि हो गए, तिन विश्वामित्र जी का दूसरा नाम कौशिक मुनि है तिनके बंश में एक देवकी नन्दन नामक पण्डित बेद, बक्ता भए थे । उन्होंने भदेशी ग्राम में आ करके निवास किया । और अनेक ब्राम्हणों को बुला कर पुत्रोष्ठि करके ब्रम्ह-भोज किया था । तब ब्राम्हणों ने प्रसन्नता पूर्वक पुत्र होने का आशीर्वाद और अबस्थी की उपाधि दी तब से देवकी नन्दन भदेशी के अवस्थी कहाए । [तिन के पुत्र १] शोभाराम सो अवस्थी भदेशी के कहाये ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

[शोभाराम के पुत्र २] बैजनाथ १ विश्वम्भर २ बैजनाथ पिहानी के अवस्थी, विश्वम्भर मुर्चापुर के के अवस्थी, [बैजनाथ के पुत्र ५] गिरजापति १ बलदेव २ द्वारिका ३ कुन्जू ४ नाशकेत ५, गिरजापति ऐंठाने के तिवारी, बलदेव जिलहू के तिवारी द्वारिका कपूर थला के पाठक, कुन्जू कलिंग के दीक्षित, नाशकेत इटावा के दुबे, [नाशकेत के पुत्र १] भगोले सो शिवराजपुर के दुबे, विश्वम्भर के पुत्र २] चिन्तामणि १ रतिनाथ २ चिन्तामणि इटावा के त्रिगुणायत, रतिनाथ कम्पिला के त्रिगुणायत, [चिन्तामणि के पुत्र ३] किशोर १ गोपी २ गदाधर ३, किशोर कलिंग के मिश्र, गोपी बहरामपुर के मिश्र, गदाधर संकेतपुर के मिश्र कहाए। इति।

॥ कौशिक गोत्र वर्णन ॥

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
देवकीनन्दन	भदेशी के	अवस्थी ३	। गोपी	बहिरामपुर के	मिश्र २
शोभाराम	,,	२	। गदाधर	संकेतपुर के	मिश्र ३
बैजनाथ	पिहानी ,,	२	। द्वारिका	कपूरथलाके	पाठक १
विश्म्भर	मुर्चापुर ,,	२	। कुन्जु	कलिंग के	दीक्षित १
गिरजापति	एठाने के	तिवारी २	। चिंतामणि	इटावा के	तिवारी ३
बलदेव	जिलहू ,,	२	। रतिनाथ	कम्पिला ,,	३
नाशकेत	इटावा के	दुबे १	। ख्यूरा के		अग्निहोत्री १
भगोले	शिवराजपुर के	दुबे ३	। सुधाकर के		राउत १
किशोर	कलिंग के	मिश्र ३	। ॥ इति कौशिक गोत्र ॥		

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कविस्त गोत्रस्य व्याख्यानम्

श्री ब्रम्हा जी के पुत्र कविस्त मुनि अति तेजस्वी भए जिनके बंश मे योगराज नाम पण्डित योगशास्त्र के वेता उत्पन्न भए। तिनके पुत्र २, भद्रशील १ महेधर २, भद्रशील नसुरा के दुबे, महीधर बिलखारी के पाठक, [महीधर के पुत्र २] किन्नर १ कन्दर्प २, [किन्नर क पुत्र १] हरदेव सो नानामऊ के पांदे, [कन्दर्प के पुत्र ३] जानकी १ जयराम २ कुन्दन ३, जानकी किनांवा के त्रिगुणायत, जयराम गुगरहा के दुबे, कुन्दन बिठलापुर के चौबे, [जयराम के पुत्र ३] रंगनाथ १ मांधाता २ खेतल ३, रंगनाथ भटपुरा के दुबे, मान्धाता चचेड़ी के चौबे, खेतल कहिंजरी के अवस्थी, (कुन्दन के पुत्र-३) पुखराज १ चुन्नी २ शक्तिधर ३, पुखराज जिलौली के मिश्र, शक्तिधर शीतला के अग्निहोत्री कहाए।

॥ कविस्त गोत्र वर्णन ॥

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
भद्रशील	नसुरा के दुबे	३	कुन्दन	बिठलापुर के चौबे	२
जयराम	गु हा '	२	मान्धाता	चचेड़ी '	२
रंगनाथ	भटपुरा '	२	हरदेव	नानामऊ के पाँडे	२
पुखराज	जिलौली '	२	खेतल	कहिंजरा के अवस्थी	२
महोदर	बिलखारी के पाठक	३	चुन्नी	मंगलपुर के मिश्र	२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असामी	स्थान	बिश्वा	असामी	स्थान	बिश्वा
किन्नर	घाटमपुर के पाठक	२	शक्तिधर	शीतल के अग्निहोत्री	२
कन्दर्प	बिलखारी ,	२	जांनकी	किनावाके त्रिगुणायत	

। इति कविस्त गोत्र समाप्त ।

। पाराशर गोत्र व्याख्यानम् ।

श्री महामुनि पाराशर जी जिनके पुत्र वेदव्यास और पौत्र सुखदेव जी महाराज जिन्होने राजा परिक्षित को श्रीमद भागवत पराण सुनाई तिन पाराशर जी के बंश में एक शक्तिधर नाम के पण्डित अति प्रतापी उत्पन्न भए और वे नागपुरी पाराशरी दुबे कहाये (शक्तिधर के पुत्र१ महेशदत्त सो शुक्ल नागापुरी (महेशदत्त के पुत्र३) शिवभजन १ हरि भजन २ रामभजन ३, शिवभजन रामपुरी शुक्ल, हरिभजन नागापुरी दुबे, रामभजन नागापुरी तिवारी, [शिवभजन के पुत्र ३] बिहारी १ शंकर २ परमानन्द ३, बिहारी सिमौनी के मिश्र, शंकर सिमौनी के अवस्थी, परमानन्द सिमौनी क दीक्षित, [हरिभजन के पुत्र ३] सधारी १ गोविन्द २ महतू ३ सधारी सिमौनी के दुबे, गोविन्द बसही के दुबे, महतू नरवल के दुबे, [रामभजन के पुत्र २] प्रीतम १ विष्णुदत्त २ प्रीतम पहाड़पुर के तिवारी, विष्णुदत्त गुदरियापुर के शुक्ल कहाए ।

।। पाराशर गोत्र वर्णण ।।

असामी	स्थान	विश्वा	असामी	स्थान	विश्वा
शक्तिधर	पाराशरी दुबे	१	बिष्णुदत्त	गुदरिया के शुक्ल	२
हरिभजन	नागपुरी ,	२	रामभजन	नागापुरी तिवारी	२
सधारी	सिमौनी '	१	प्रीतम	पहाड़पर	२
गोबिंद	नरवल '	१	बिहारी	सिमौनी के मिश्र	२
महतू	बसही '	१	शंकर	, अवस्थी	२
महेशदत्त	नागापुरी शुक्ल	१	परमानन्द	' दीक्षित	२
शिवभजन	रामपूरी '	१	सिमौनी के	पाठक	२
			।	पटनहा मिश्र	२

।। इति पाराशर गोत्र समाप्त ।।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कान्यकुब्ज ब्राम्हणों के प्रसिद्ध षोड़श गोत्रों के वेद उपवेद, शाखा सूत्रप्रवर, शिषा पाद देवता लिखते हैं

कश्यप काश्यप, वत्स शांडिल्य, कौशिक, धनञ्जय ये छः गोत्र वालों का सामवेद और शेष कात्यायन, भरद्व ज उपमन्यु सांकृत गर्ग, गौतम, भरद्वाज, वशिष्ठ, कविस्त, पाराशर इन दस गोत्रों का यजुर्वेद है। जिन गोत्रों का समावेश है उनको कौथुमी शाखा और गोमिल सूत्र और बाम शिखा अर्थात बायें ओर घुमाकर शिखा में गांठ देना और बामपाद अर्थात यज्ञादि शुभ कार्य में बाम चरण प्रक्षालन करना तथा गन्धर्व उपवेद और विष्णु देवता है। और जिन गोत्रों का यजुर्वेद है उनका धनुर्वेद उपवेद और माध्यंदिनी शाखा और कात्यायन सूत्र और दक्षिण शिखा अर्थात दक्षिण की ओर घमाकर शिखा में ग्रंथि देना और दक्षिण पाद है अर्थात शुभ कार्य में दक्षिण पाद प्रक्षालन करना तथा शिव देवता ह प्रवर नीचे देखिए।

कश्यप-काश्यप, असित देवल, ३
कत्यायन-शांडिल्य, विश्वामित्र, वशिष्ठ, ३
शांडिल्य-शांडिल्य, असित, देवल, ३
सांकृत-सांख्यायन, किल, सांकृत, ३
उपमन्यु-वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, उपमन्यु, ३
भरद्वाज-भारद्वाज, आंगिरा, बृहस्पति, ३
गर्ग-आंगिरश, वार्हस्पत्य, भारद्वाज, शौनक, गर्ग ५
गौतम-आंगिरस, वार्हस्पत्य, गौतम, ३
धनञ्जय-माधुच्छन्दस, विश्वामित्र, धनन्जय, ३
काश्यप-नैधृव, अवत्सार, कौशिक, लौहित, काश्यप, ५
वत्व-वत्स, च्यवन, और्व, अत्यवान, जमदग्नि, ५
वशिष्ठ-एक वशिष्ठ, १
कौशिक-कौशिक, देवराज, अघमर्षण, ३
कविस्त-कविस्त, देवराज, विश्वामित्र, ३
पाराशर-वशिष्ठ, साँकृत, पाराशर ३ ॥ इति ॥

मुद्रक— ओम मुद्रण कार्यालय १०७/३० जवाहर नगर कानपुर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पच्चीस चालीसा पाठ संग्रह

इस पुस्तक के अन्दर २५ चालीसा उनके अष्टक स्तुति आरती एवं स्त्रोत दिये गये हैं। सुन्दर पुस्तक का मूल्य २०) हैं तथा डाक खर्च अलग लगेगा ।

नोट - पुस्तक भेजते समय जो मूल्य होगा वही लगेगा

व्यापार दस्तकारी

(पांच पैसे में एक तरीका)

इस पुस्तक में धन कमाने के २०० तरीकों के विषय में बहुत सरल भाषा में जानकारी दी गई है की जिनकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार काम चुन सकता है ।

इस पुस्तक में सैकड़ों हुनर छपे हुए हैं । चाहे कोई सा अपने मतलब का चुन लें और उससे हजारो रूपये माहवार कमायें । किसी उस्ताद की जरूरत नहीं । मूल्य ३५-०० रूपए ।

डाक खर्च अलग

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता :-

प्रकाशक - श्री जनता बुक स्टाल

मूलगंज, कानपुर - २०८००१

फोन. ३१९२३४

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA